facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 26 जनवरी 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 28 ● मूल्यः 5 रुपए

एक फरवरी का बजट और इतिहास...

जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी का प्राकट्य दिवस

पेज-10-11

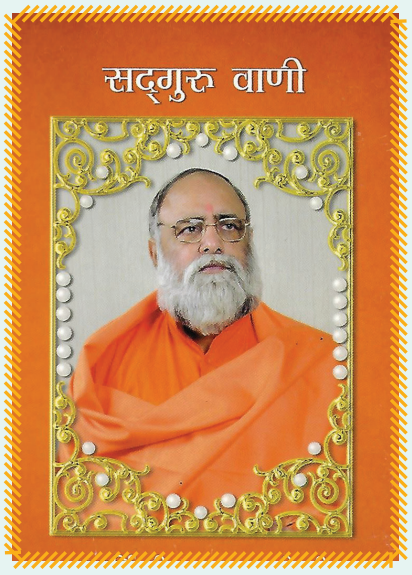

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

●

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

UGC के नए नियमों पर सवर्णों का आक्रोश

बराबरी के नाम पर नया भेदभाव?

नई दिल्ली से लेकर यूपी तक विरोध की आंच

@ भारतश्री ब्यूरो

देशभर में यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (UGC) के नए नियमों को लेकर विरोध तेज हो गया है। खास तौर पर जनरल कैटेगरी के छात्र और सवर्ण समाज से जुड़े लोग इन नियमों को अपने खिलाफ बता रहे हैं। राजधानी नई दिल्ली में UGC मुख्यालय के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। परिसर के भीतर किसी भी तरह के प्रदर्शन को रोकने के लिए बैरिकेड्स लगाए गए हैं और पुलिस बल तैनात है।वहीं उत्तर प्रदेश के कई जिलों लखनऊ, रायबरेली, वाराणसी, मेरठ, प्रयागराज और सीतापुर—में छात्रों, युवाओं और सामाजिक संगठनों ने सड़कों पर उतरकर विरोध जताया। रायबरेली में तो मामला और आगे बढ़ गया, जब भाजपा किसान नेता रमेश बहादुर सिंह और गौरक्षा दल के अध्यक्ष महेंद्र पांडेय ने सवर्ण सांसदों को प्रतीकात्मक तौर पर चूड़ियां भेज दीं। इसे सवर्ण समाज की नाराजगी और राजनीतिक दबाव के रूप में देखा जा रहा है।

इस्तीफा और तंज ने बढ़ाई सियासी गर्मी

UGC के नए नियमों का असर प्रशासनिक और राजनीतिक हलकों में भी दिखने लगा है। उत्तर प्रदेश के बरेली में सिटी मजिस्ट्रेट अलंकार अग्निहोत्री ने नियमों के विरोध में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। यह कदम सरकार और UGC के लिए बड़ा संकेत माना जा रहा है।इस बीच कवि और पूर्व आम आदमी पार्टी नेता कुमार विश्वास ने सोशल मीडिया पर तीखा तंज कसा। उन्होंने लिखा,"चाहे तिल लो या ताड़ लो राजा,राई लो या पहाड़ लो राजा,मैं अभागा 'सवर्ण' हूंमेरा रोंया-रोंया उखाड़ लो राजा।"उनकी इस पोस्ट ने सोशल मीडिया पर बहस को और तेज कर दिया है।

आखिर क्या हैं UGC के नए नियम?

UGC ने 13 जनवरी को जिन नए नियमों को अधिसूचित किया है, उनका नाम है 'प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन्स, 2026' ।UGC का कहना है कि इन नियमों का मकसद कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में जाति आधारित भेदभाव को रोकना और शिक्षा व्यवस्था को ज्यादा निष्पक्ष बनाना है। इसके तहत हर उच्च शिक्षण संस्थान में विशेष समितियां, हेल्पलाइन और मॉनिटरिंग टीमें बनाने के निर्देश दिए गए हैं।ये टीमें मुख्य रूप से SC, ST और OBC वर्ग के छात्रों से जुड़ी शिकायतों को देखेंगी। सरकार और UGC का दावा है कि इससे कैंपस में जवाबदेही बढ़ेगी और कमजोर वर्ग के छात्रों को सुरक्षित माहौल मिलेगा।

नियमों के खिलाफ खड़े लोगों का कहना है कि यह व्यवस्था एकतरफा है। जनरल कैटेगरी के छात्रों का आरोप है कि उन्हें पहले से ही शक की नजर से देखा जा रहा है और नए नियम उन्हें 'स्वाभाविक अपराधी' बना देते हैं।विरोध कर रहे छात्रों का कहना है कि अगर किसी भी विवाद में केवल एक वर्ग की शिकायतों को प्राथमिकता दी जाएगी और झूठी शिकायत पर कोई सजा नहीं होगी, तो कैंपस में असंतुलन और अराजकता बढ़ेगी। उनका डर है कि इससे पढ़ाई का माहौल बिगड़ेगा और शिक्षक-छात्र संबंधों पर भी असर पड़ेगा।

UGC के नियमों में किए गए तीन बड़े बदलाव

जातिगत भेदभाव की स्पष्ट परिभाषा

नए नियमों में पहली बार जातिगत भेदभाव की साफ परिभाषा दी गई है। इसके अनुसार, जाति, धर्म, नस्ल, लिंग, जन्म स्थान या विकलांगता के आधार पर किया गया कोई भी अनुचित या पक्षपाती व्यवहार, जो पढ़ाई में बराबरी में बाधा बने या मानव गरिमा के खिलाफ हो, उसे जातिगत भेदभाव माना जाएगा। ड्राफ्ट नियमों में यह स्पष्टता नहीं थी।

OBC को भी परिभाषा में शामिल किया गया

पहले ड्राफ्ट में केवल SC और ST छात्रों का जिक्र था। अब फाइनल नियमों में OBC छात्रों को भी शामिल कर लिया गया है। यानी OBC के खिलाफ किसी भी तरह के भेदभाव को भी जातिगत भेदभाव माना जाएगा। सबसे ज्यादा विवाद इसी बिंदु पर है। ड्राफ्ट नियमों में यह प्रावधान था कि अगर कोई छात्र झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायत करता है तो उस पर आर्थिक दंड लगाया जा सकता है या उसे सस्पेंड किया जा सकता है। लेकिन फाइनल नियमों में यह प्रावधान हटा लिया गया है। विरोध कर रहे छात्रों का कहना है कि इससे झूठी शिकायतों को बढ़ावा मिलेगा।

सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर मामला

UGC के नए नियमों को अब कानूनी चुनौती भी मिल गई है। एडवोकेट विनीत जिंदल ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। याचिका में कहा गया है कि ये नियम जनरल कैटेगरी के छात्रों के साथ भेदभाव करते हैं और उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।याचिका में खास तौर पर रेगुलेशन 3(सी) के क्रियान्वयन पर रोक लगाने की मांग की गई है। साथ ही कोर्ट से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है कि 2026 के नियमों के तहत बना ढांचा सभी जातियों पर समान रूप से लागू हो, न कि केवल कुछ वर्गों पर।

सरकार और UGC दोनों का कहना है कि इन नियमों को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। उनका तर्क है कि भारत के कई विश्वविद्यालयों में अब भी जाति आधारित भेदभाव की शिकायतें सामने आती रहती हैं और इन नियमों का मकसद केवल उन्हें रोकना है, न कि किसी एक वर्ग को निशाना बनाना।UGC अधिकारियों के मुताबिक, ये नियम दंडात्मक नहीं बल्कि सुधारात्मक हैं और अगर कहीं दुरुपयोग होता है तो उस पर भी नजर रखी जाएगी।

बराबरी बनाम संतुलन की बहस

UGC के नए नियमों ने एक बार फिर शिक्षा और सामाजिक न्याय की बहस को केंद्र में ला दिया है। सवाल यह नहीं है कि भेदभाव रोका जाए या नहीं, सवाल यह है कि क्या इसे रोकने के लिए बनाई गई व्यवस्था सभी के लिए बराबर है। जहां एक तरफ वंचित वर्ग के छात्र सुरक्षा और सम्मान की मांग कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ जनरल कैटेगरी के छात्र खुद को कटघरे में खड़ा महसूस कर रहे हैं। आने वाले दिनों में यह साफ होगा कि सरकार और UGC इस असंतोष को कैसे संभालते हैं।एक बात तय है ,UGC के ये नियम अब सिर्फ शिक्षा नीति का मुद्दा नहीं रहे, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक बहस का बड़ा केंद्र बन चुके हैं।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

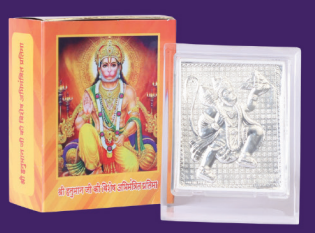

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

उत्तर भारत पर मौसम का डबल अटैक

मैदानी राज्यों में ओले-बारिश, पहाड़ों में भारी बर्फबारी; स्कूल बंद, जनजीवन अस्त-व्यस्त

@ अभिषेक चौबे

देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से इन दिनों तेज मौसम बदलाव की चपेट में हैं। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में स्ट्रॉन्ग वेस्टर्न डिस्टरबेंस सक्रिय है। इसी का नतीजा है कि मंगलवार से कई इलाकों में बारिश, ओलावृष्टि और तेज हवाओं का दौर शुरू हो गया है। वहीं पहाड़ी राज्यों में लगातार बर्फबारी से हालात और मुश्किल हो गए हैं।मैदानी इलाकों में जहां अचानक बढ़ी सर्दी ने लोगों को चौंका दिया है, वहीं पहाड़ों पर बर्फ के कारण सड़कें, हाइवे और हवाई सेवाएं तक प्रभावित हो गई हैं।

यूपी, एमपी और राजस्थान में बारिश के साथ गिरे ओले

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के कई जिलों में मंगलवार को तेज बारिश के साथ ओले गिरे। इससे खेतों में खड़ी फसलों को नुकसान पहुंचने की आशंका है। किसानों की चिंता एक बार फिर बढ़ गई है, क्योंकि यह मौसम ऐसे वक्त पर आया है जब रबी की फसलें पकने की स्थिति में हैं।राजस्थान में खराब मौसम का असर सबसे ज्यादा देखने को मिला। यहां अलग-अलग इलाकों में बिजली गिरने की घटनाएं सामने आईं, जिनमें दो लोगों की मौत हो गई। प्रशासन ने लोगों से खराब मौसम के दौरान खुले में न निकलने की अपील की है।

मध्य प्रदेश: स्कूलों में छुट्टी, सर्दी बढ़ी

मध्य प्रदेश के ग्वालियर और शिवपुरी में मौसम को देखते हुए कक्षा 8वीं तक के स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गई है। मंगलवार देर रात राज्य के 20 से ज्यादा जिलों में तेज बारिश हुई। गुना, उज्जैन, आगर-मालवा और शाजापुर में ओले भी गिरे।बारिश के बाद तापमान में गिरावट आई है और ठंड फिर से बढ़ गई है। मौसम विभाग ने बुधवार को भी राज्य के 14 जिलों में आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, मैहर, रीवा, मऊगंज, सागर और दमोह शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश: कई जिलों में स्कूल बंद

उत्तर प्रदेश में भी मौसम ने लोगों की दिनचर्या बिगाड़ दी है। बारिश और सर्द हवाओं के चलते ठंड बढ़ गई है। संभल जिले में कक्षा 8वीं तक और सिद्धार्थनगर में कक्षा 12वीं तक के स्कूल आज बंद रखे गए हैं।राज्य के 29 जिलों में बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया गया है। प्रशासन ने खासकर बच्चों और बुजुर्गों को सावधानी बरतने की सलाह दी है।

उत्तराखंड में लगातार दूसरे दिन बर्फबारी

उत्तराखंड में हालात और भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। बुधवार को लगातार दूसरे दिन कई जिलों में बर्फबारी हो रही है। चकराता और औली में सड़कों पर करीब दो फीट तक बर्फ जम गई है, जिससे आवागमन पूरी तरह बाधित हो गया है।खराब मौसम को देखते हुए राज्य के 8 जिलों में कक्षा 12वीं तक के सभी स्कूल बंद कर दिए गए हैं। पहाड़ी इलाकों में फिसलन और एवलांच का खतरा बना हुआ है।

सोनमर्ग में एवलांच, होटल बर्फ में दबे

जम्मू-कश्मीर के सोनमर्ग में मंगलवार रात बड़ा हादसा टल गया। यहां अचानक एवलांच आ गया, जिससे कई होटल और रिसॉर्ट बर्फ में दब गए। यह पूरी घटना पास लगे CCTV कैमरों में कैद हो गई।वीडियो में साफ दिख रहा है कि कैसे होटलों के पीछे से बर्फ का सैलाब तेजी से नीचे आया और देखते ही देखते इमारतों को ढक लिया। राहत की बात यह है कि अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। बचाव दल तुरंत मौके पर भेज दिए गए हैं और हालात पर नजर रखी जा रही है।

उड़ानें रद्द, हाइवे बंद

जम्मू-कश्मीर में भारी बर्फबारी से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। श्रीनगर-जम्मू को जोड़ने वाला NH-44 काजीगुंड–बनिहाल के पास बंद रहा। श्रीनगर एयरपोर्ट पर खराब मौसम के कारण 58 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं।डोडा जिले में बर्फ में फंसे 40 सैनिकों समेत 60 लोगों को बॉर्डर रोड ऑर्गनाइजेशन (BRO) ने सुरक्षित बाहर निकाला। ऊंचाई वाले इलाकों में एवलांच का अलर्ट जारी किया गया है।इसी बीच शोपियां से एक इंसानियत भरी तस्वीर भी सामने आई, जहां एक डॉक्टर ने भारी बर्फबारी के बावजूद JCB की मदद से अस्पताल पहुंचकर 10 सर्जरी कीं।

हिमाचल प्रदेश: सड़कें और हाइवे ठप

हिमाचल प्रदेश में भी मौसम का कहर जारी है। शिमला समेत ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी और बारिश के कारण 700 से ज्यादा सड़कें और 3 नेशनल हाइवे बंद हैं।चंबा जिले में इस सीजन की सबसे ज्यादा बर्फबारी दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने कुल्लू, चंबा, किन्नौर और लाहौल-स्पीति जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। प्रशासन ने लोगों से अनावश्यक यात्रा न करने की अपील की है।उत्तराखंड में मंगलवार को सभी जिलों में बारिश हुई। उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, पिथौरागढ़ और देहरादून में रुक-रुककर बर्फबारी होती रही। शाम के वक्त हरिद्वार में भी ओले गिरे, जिससे स्थानीय लोगों को परेशानी हुई।

बढ़ी मुश्किलें, प्रशासन अलर्ट मोड पर

लगातार बदलते मौसम ने आम लोगों के साथ-साथ प्रशासन की भी चिंता बढ़ा दी है। कहीं स्कूल बंद हैं, तो कहीं सड़कें और हाइवे। पहाड़ों में एवलांच का खतरा बना हुआ है, जबकि मैदानी इलाकों में ओलावृष्टि से किसानों को नुकसान का डर है।मौसम विभाग ने अगले 24 से 48 घंटे तक हालात ऐसे ही बने रहने की संभावना जताई है। लोगों से अपील की गई है कि मौसम से जुड़ी चेतावनियों को गंभीरता से लें और जरूरत न हो तो यात्रा से बचें।मार्च के करीब आते-आते जहां लोग गर्मी की तैयारी करने लगे थे, वहीं इस बदले मौसम ने फिर से सर्द कपड़े निकालने पर मजबूर कर दिया है। आने वाले दिनों में मौसम कब सामान्य होगा, इस पर अभी संशय बना हुआ है।फिलहाल देश के बड़े हिस्से में बारिश, ओले और बर्फबारी ने साफ कर दिया है कि यह मौसम सिर्फ राहत नहीं, बल्कि बड़ी चुनौती बनकर सामने आया है।

गणतंत्र दिवस 2026: परेड में कौन मार्च करेगा? 18 दलों का पूरा ब्यौरा

गणतंत्र दिवस की परेड हर साल देश की ताकत और एकता को दिखाती है। इस साल 26 जनवरी 2026 को कर्तव्य पथ पर होने वाली परेड खास है क्योंकि इसका थीम है 'वंदे मातरम के 150 साल'। यह गाना आजादी की लड़ाई में बहुत अहम रहा और अब इसे याद करके परेड में फूलों की सजावट, निमंत्रण कार्ड, वीडियो और झांकियां दिखाई जाएंगी। 19 से 26 जनवरी तक पूरे देश में बैंड 'वंदे मातरम' बजाएंगे। परेड में 18 मार्चिंग दल, 13 बैंड, 30 झांकियां और पहली बार सेना का बैटल अर्रे शामिल है। यूरोपीय संघ का दल भी पहली बार आएगा। मुख्य मेहमान हैं यूरोपीय काउंसिल के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा और यूरोपीय कमीशन की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन। परेड सुबह 10:30 बजे शुरू होगी और करीब 90 मिनट चलेगी। इसमें सेना की ताकत, सांस्कृतिक विविधता और नए हथियार दिखेंगे। पहली बार सेना के जानवरों का दल मार्च करेगा, जिसमें ऊंट, पोनी, कुत्ते और पक्षी होंगे। इंडियन एयर फोर्स परेड की अगुआई करेगी और फ्लाईपास्ट में 29 विमान जैसे राफेल, एसयू-30, मिग-29 शामिल होंगे। सेना का बैटल अर्रे असली जंग जैसा दिखाएगा, जिसमें टैंक, मिसाइल और ड्रोन होंगे। परेड में 10,000 खास मेहमान आएंगे, जैसे किसान, वैज्ञानिक, उद्यमी, छात्र और खिलाड़ी। यह सब देश की प्रगति और एकता को दर्शाता है। परेड देखने के लिए मेट्रो और बस की सुविधा है, और दिव्यांगों के लिए खास इंतजाम। यह परेड न सिर्फ सैनिकों की बहादुरी दिखाती है बल्कि देश के भविष्य पर सोचने को मजबूर करती है कि कैसे हम सब मिलकर आगे बढ़ सकते हैं। कुल मिलाकर, यह एक ऐसा मौका है जहां इतिहास और आधुनिकता मिलते हैं।

सेना के दल: बहादुरी की कहानियां

भारतीय सेना के दल परेड का मुख्य हिस्सा हैं और इस साल 9 दल शामिल हैं, जो देश की सैनिक ताकत दिखाते हैं। सबसे पहले 61 कैवलरी का माउंटेड कॉलम, जो दुनिया की आखिरी घुड़सवार रेजिमेंट में से एक है। इसे 1954 में बनाया गया और यह समारोहों में हिस्सा लेती है। फिर रिमाउंट एंड वेटरनरी कोर का जानवरों का दल, जो पहली बार आ रहा है। इसमें 2 बैक्ट्रियन ऊंट, 4 जांसकर पोनी, 4 रैप्टर्स, 10 देसी कुत्ते जैसे मुधोल हाउंड, रामपुर हाउंड और 6 सैनिक कुत्ते हैं। ये ऊंचाई वाले इलाकों में मदद करते हैं। स्काउट्स कंटिजेंट में अरुणाचल, लद्दाख, सिक्किम, गढ़वाल, कुमाऊं और डोगरा स्काउट्स के सैनिक हैं, जो पहाड़ी जंग में माहिर हैं। राजपूत रेजिमेंट 1778 से है, इसका नारा 'सर्वत्र विजय' है और यह कई जंगों में जीती है। असम रेजिमेंट 1941 में बनी, द्वितीय विश्व युद्ध में बर्मा में लड़ी और इसका प्रतीक एक सींग वाला गैंडा है। जम्मू एंड कश्मीर लाइट इन्फैंट्री 1947 में बनी, पहाड़ी इलाकों में छोटी टीमों से लड़ती है। आर्टिलरी रेजिमेंट 1827 से है, इसमें तोपें, रॉकेट और रडार हैं और अब महिलाएं भी कमांड कर रही हैं। भैरव लाइट कमांडो बटालियन का डेब्यू है, जो इन्फैंट्री और स्पेशल फोर्स के बीच का पुल है। लद्दाख स्काउट्स 2000 में रेजिमेंट बनी, कारगिल जंग में बहादुरी दिखाई और सियाचिन में तैनात है। ये दल न सिर्फ मार्च करेंगे बल्कि बैटल अर्रे में टैंक जैसे टी-90, अर्जुन, मिसाइल जैसे नाग, ब्रह्मोस और ड्रोन दिखाएंगे। यह दिखाता है कि सेना कितनी तैयार है। ऐसे दल देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं और हमें गर्व महसूस कराते हैं। क्या हम इनकी मेहनत को समझते हैं?

नौसेना और वायुसेना: आकाश और समुद्र की ताकत

नौसेना और वायुसेना के दल परेड में देश की समुद्री और हवाई शक्ति को दर्शाते हैं। भारतीय नौसेना का दल 144 नाविकों का है, जिनकी औसत उम्र 25 साल है। इन्हें पूरे देश से चुना गया और 2 महीने ट्रेनिंग दी गई। लीडर हैं लेफ्टिनेंट करण नाग्याल और प्लाटून कमांडर लेफ्टिनेंट पवन कुमार गांदी, लेफ्टिनेंट प्रीति कुमारी, लेफ्टिनेंट वरुण द्रेवेरिया। यह दल आत्मनिर्भर समुद्री ताकत दिखाता है। नौसेना की झांकी में 5वीं सदी के जहाज से लेकर आधुनिक आईएनएस विक्रांत, प्रोजेक्ट 17ए फ्रिगेट्स, कलवरी क्लास सबमरीन और जीसैट-7आर दिखाएंगे। सी कैडेट्स भी हिस्सा लेंगे। भारतीय वायुसेना का दल 144 सदस्यों का है, लीडर स्क्वाड्रन लीडर जगदेश कुमार। इसमें स्क्वाड्रन लीडर निकिता चौधरी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट प्रखर चंद्राकर, फ्लाइट लेफ्टिनेंट दिनेश शामिल हैं। नारा है 'टच द स्काई विद ग्लोरी'। वायुसेना बैंड में 72 संगीतकार हैं, जिसमें 9 महिला अग्निवीरवायु पहली बार हैं और 'साउंड बैरियर' बजाएंगी। वायुसेना की झांकी 'संग्राम से राष्ट्र निर्माण तक' है, जो जंग से देश निर्माण तक की कहानी बताती है। फ्लाईपास्ट में अपाचे, प्रचंड हेलीकॉप्टर, टी-90 टैंक, बीएमपी II नाग मिसाइल के साथ, स्पाइक सिस्टम, यूएवी वाहन और अनमैन्ड ग्राउंड व्हीकल्स दिखेंगे। ये दल दिखाते हैं कि कैसे नौसेना और वायुसेना देश की रक्षा करती हैं। परेड में इनकी भूमिका संतुलित दृष्टिकोण देती है, जहां जमीन के साथ आकाश और समुद्र भी महत्वपूर्ण हैं। क्या हम इनकी चुनौतियों को समझते हैं?

केंद्रीय बल और अन्य दल: सुरक्षा की रीढ़

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ), दिल्ली पुलिस और अन्य दल परेड में आंतरिक सुरक्षा और युवा भागीदारी दिखाते हैं। सीआरपीएफ का दल असिस्टेंट कमांडेंट सिमरन बाला लीड कर रही हैं, जो पहली महिला हैं जो 140 से ज्यादा पुरुषों के दल को लीड करेंगी। सीआईएसएफ, बीएसएफ का ऊंट दल, एसएसबी और सीआरपीएफ की संयुक्त महिला मोटरसाइकिल टीम, आईटीबीपी, असम राइफल्स के दल हैं। ये बल सीमाओं, आतंकवाद और आपदाओं से निपटते हैं। दिल्ली पुलिस का दल शहर की सुरक्षा दिखाता है। एनसीसी के लड़के और लड़कियों के दल युवाओं की अनुशासन और देशभक्ति दर्शाते हैं। युवा संगठनों का दल भी शामिल है। यूरोपीय संघ का दल पहली बार है, जिसमें 4 ध्वजवाहक दो जिप्सी वाहनों पर होंगे। यह भारत-यूरोप के व्यापार, तकनीक, जलवायु और भू-राजनीति संबंध दिखाता है। ये दल परेड को विविध बनाते हैं। कुल 18 दल हैं, जो सेना से लेकर पुलिस तक की एकता दिखाते हैं। बैंड में 13 हैं, जिसमें आईएएफ बैंड महिलाओं के साथ। झांकियां 30 हैं, जो राज्यों, मंत्रालयों की हैं। सांस्कृतिक प्रदर्शन में 2500 कलाकार हैं। यह सब मिलकर एक संतुलित नजरिया देते हैं, जहां सैनिक ताकत के साथ नागरिक सुरक्षा भी जरूरी है। ऐसे दल हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि देश की सुरक्षा सिर्फ सीमाओं पर नहीं, अंदर भी है।

विशेष आकर्षण और मेहमान: नया और यादगार

परेड के विशेष आकर्षण इसे और रोचक बनाते हैं। पहली बार सेना का बैटल अर्रे, जो जंग का असली सीन दिखाएगा, जिसमें टोही, लॉजिस्टिक्स और बैटल गियर में सैनिक होंगे। भैरव लाइट कमांडो का डेब्यू, शक्तिबान रेजिमेंट, ड्रोन पावर, यूनिवर्सल रॉकेट लांचर जैसे स्वदेशी हथियार। जानवरों का दल ऐतिहासिक है, जिसमें ऊंट 250 किलो वजन उठाते हैं, पोनी 70 किमी पैट्रोल करती हैं, कुत्ते पता लगाते हैं। फ्लाईपास्ट में ऑपरेशन सिंदूर फॉर्मेशन। विशेष मेहमान 10,000 हैं, जिसमें वीर गाथा विजेता, शोधकर्ता, किसान, महिलाएं शामिल। भारत पर्व रेड फोर्ट पर, राष्ट्रीय स्कूल बैंड प्रतियोगिता, प्रोजेक्ट वीर गाथा 5.0 और पीएम की एनसीसी रैली। मुख्य मेहमान यूरोपीय नेता हैं, जो अंतरराष्ट्रीय संबंध दिखाते हैं। थीम वंदे मातरम हमें इतिहास से जोड़ती है। परेड लाइव दूरदर्शन पर, यूट्यूब पर स्ट्रीम होगी। इंतजाम जैसे मुफ्त मेट्रो, पार्क एंड राइड बस, दिव्यांगों के लिए रैंप, पानी, टॉयलेट। यह सब मिलकर परेड को विचारोत्तेजक बनाते हैं, जहां हम सोचें कि देश की प्रगति में सबका योगदान है। क्या हम इनसे प्रेरणा लेते हैं?

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदः 73 साल का अनसुलझा विवाद और आज की लड़ाई

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद कौन हैं?

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती का जन्म 15 अगस्त 1969 को उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के ब्रह्मणपुर गांव में हुआ था। उनका असली नाम उमाशंकर उपाध्याय है और वे एक सामान्य परिवार से आते हैं। बचपन में उन्होंने प्राथमिक शिक्षा घर के पास ली, फिर 1980 से 1986 तक गुजरात में पढ़ाई की। वहां वे स्वामी करपात्री जी महाराज के शिष्य ब्रह्मचारी राम चैतन्य के संपर्क में आए, जिससे उनकी रुचि धर्म और राजनीति में बढ़ी। बाद में वे वाराणसी चले गए, जहां उन्होंने संस्कृत व्याकरण, वेद, पुराण, उपनिषद, आयुर्वेद और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। उन्होंने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री और आचार्य की डिग्री ली। पढ़ाई के दौरान वे छात्र राजनीति में सक्रिय रहे और 1994 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के समर्थन से छात्र संघ चुनाव जीते। वे आरएसएस के छात्र विंग से जुड़े थे और नरेंद्र मोदी के समर्थक भी रहे। 1990 के अंत में उन्होंने संन्यास लिया और अविमुक्तेश्वरानंद नाम रखा। 2006 में स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती से दीक्षा ली और उत्तराखंड के ज्योतिरमठ में धार्मिक गतिविधियों की देखभाल की। 2022 में स्वरूपानंद के निधन के बाद उन्हें ज्योतिरमठ का शंकराचार्य बनाया गया, लेकिन यह पद विवादित है। वे कई मुद्दों पर खुलकर बोलते हैं, जैसे गौ रक्षा, मंदिर निर्माण और राजनीतिक फैसले। उन्होंने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में नहीं गए, राहुल गांधी को हिंदू धर्म से बाहर बताया और योगी सरकार की आलोचना की। उनका रुख संतों की भूमिका को लोकतंत्र में मजबूत करने का है, लेकिन कुछ लोग उन्हें राजनीतिक कहते हैं। वे हिंदू समाज को एकजुट करने की बात करते हैं, पर उनके बयान अक्सर विवाद पैदा करते हैं। कुल मिलाकर, वे एक ऐसे संत हैं जो परंपरा और आधुनिक मुद्दों को जोड़ते हैं, लेकिन उनके दावे पर कानूनी सवाल हैं। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि धार्मिक पदों में कितनी पारदर्शिता होनी चाहिए।

ज्योतिर मठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ज्योतिर मठ, जिसे ज्योतिष पीठ भी कहते हैं, आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित किया गया था। यह उत्तर भारत का प्रमुख मठ है, जो अद्वैत वेदांत की रक्षा करता है। यह चार प्रमुख पीठों में से एक है, अन्य हैं श्रृंगेरी, द्वारका और पुरी। इसका मुख्यालय उत्तराखंड के जोशीमठ में है और इसका प्रमुख शंकराचार्य कहलाता है। पहला शंकराचार्य तोटकाचार्य था। 18वीं शताब्दी में स्वामी रामकृष्ण तीर्थ के बाद यह मठ 165 साल तक खाली रहा। इस दौरान कई गुरु दावा करते रहे, लेकिन कोई स्थायी नहीं हुआ। 1900 के आसपास मुकदमे भी हुए। 1941 में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती को शंकराचार्य बनाया गया, जिसे पुरी और श्रृंगेरी के शंकराचार्यों ने मंजूरी दी। उन्होंने मठ का पुनर्निर्माण किया, जमीन वापस ली और नया भवन बनवाया। उन्होंने बद्रीनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी को भी पद पर रखा। 20 मई 1953 को उनका निधन हुआ, जिसके बाद विवाद शुरू हुआ। ब्रह्मानंद ने मठ को मजबूत किया, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी पर झगड़ा हो गया। कुछ का कहना है कि परंपरा के अनुसार उत्तराधिकारी चुनना चाहिए, वसीयत से नहीं। यह मठ हिंदू धर्म की एकता का प्रतीक है, लेकिन विवादों ने इसे कमजोर किया। आज भी यह वेदांत का केंद्र है, जहां धार्मिक शिक्षा दी जाती है। यह इतिहास हमें बताता है कि धार्मिक संस्थाएं कैसे समय के साथ बदलती हैं, लेकिन परंपराओं को बनाए रखना कितना मुश्किल है। क्या ऐसे मठों में आधुनिक कानून लागू होने चाहिए? यह विचारणीय है।

73 साल पुराना विवाद और विभिन्न दावे

1953 में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के निधन के बाद ज्योतिर मठ का विवाद शुरू हुआ, जो अब 73 साल पुराना हो गया है। उनकी मौत से पहले एक वसीयत का दावा किया गया, जो दिसंबर 1952 में इलाहाबाद में रजिस्टर हुई थी। इसमें शांतानंद सरस्वती को उत्तराधिकारी बताया गया, साथ में द्वारकेशानंद, विष्णुदेवानंद और परमात्मानंद को वैकल्पिक नाम। 25 जून 1953 को शांतानंद ने पद संभाला, लेकिन अन्य तीन पीठों (पुरी, द्वारका, श्रृंगेरी) के शंकराचार्यों ने इसे मान्यता नहीं दी। उनका कहना था कि आदि शंकराचार्य की परंपरा में वसीयत का कोई स्थान नहीं, उत्तराधिकारी विद्वानों द्वारा चुना जाता है। ब्रह्मानंद के शिष्यों ने वसीयत को फर्जी बताया, जहर देने और जालसाजी के आरोप लगाए। भारत धर्म महामंडल ने स्वामी कृष्णबोध आश्रम को उत्तराधिकारी प्रस्तावित किया। कृष्णबोध ने पद संभाला, लेकिन मूल आश्रम पर कब्जा नहीं कर सके। 10 सितंबर 1973 को उनका निधन हुआ, तब उन्होंने स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को नामित किया। स्वरूपानंद ब्रह्मानंद के शिष्य थे और बाद में कृष्णबोध के। वे मूल आश्रम नहीं ले सके, इसलिए पास में नया आश्रम बनाया, जो तोटकाचार्य की गुफा के पास है। विवाद में कई दावेदार आए, जैसे वासुदेवानंद सरस्वती। यह झगड़ा परंपरा बनाम वसीयत का है। कुछ कहते हैं कि मठ 2500 साल पुरानी किताबों के नियमों से चलना चाहिए। यह विवाद हिंदू समाज को बांटता है, लेकिन हमें सोचना चाहिए कि ऐसे दावों में सच्चाई कैसे पता चले। क्या धार्मिक एकता के लिए समझौता जरूरी है?

कानूनी अड़चनें और सुप्रीम कोर्ट की भूमिका

ज्योतिर मठ के विवाद में कानून की बड़ी भूमिका है। 1953 से कई मुकदमे चले, वसीयत को फर्जी बताने वाले। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 2017 में कुछ दावेदारों को मान्यता नहीं दी। स्वामी स्वरूपानंद के निधन के बाद 12 सितंबर 2022 को स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने खुद को शंकराचार्य घोषित किया। लेकिन 16 अक्टूबर 2022 को सुप्रीम कोर्ट ने उनकी ताजपोशी रोक दी। यह गोवर्धन मठ, पुरी के स्वामी निश्चलानंद की याचिका पर हुआ, जिसमें कहा गया कि नियुक्ति मंजूर नहीं। कोर्ट ने झूठे दावे का आरोप लगाया। मामला 'जगत गुरु शंकराचार्य ज्योतिषपीठ पीएसएसएन सरस्वती बनाम स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती' है। कोर्ट ने कहा कि कोई आधिकारिक ताजपोशी नहीं हुई। हालांकि, अविमुक्तेश्वरानंद के समर्थक कहते हैं कि पीठ खाली नहीं रह सकती, इसलिए वे मुख्य शिष्य हैं। अन्य शंकराचार्यों ने विरोध नहीं किया। कानूनी अड़चन यह है कि परंपरा और कानून टकराते हैं। आदि शंकराचार्य की मठाम्नाय महानुशासनम किताब में नियम हैं, लेकिन कोर्ट वसीयत और दावों की जांच करता है। यह मामला अभी लंबित है, अंतिम फैसला नहीं आया। इससे धार्मिक संस्थाओं में पारदर्शिता का सवाल उठता है। क्या कोर्ट धार्मिक मामलों में दखल दे सकता है? यह संतुलन बनाना मुश्किल है, लेकिन न्याय जरूरी है। विवाद से हिंदू समाज को नुकसान होता है, शायद समझौते से हल निकले।

हाल की घटनाएं और मैग मेला विवाद

जनवरी 2026 में प्रयागराज के मैग मेला में विवाद छिड़ गया। 18 जनवरी को मौनी अमावस्या पर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद 200-300 अनुयायियों के साथ त्रिवेणी संगम में स्नान के लिए जा रहे थे। पुलिस ने उनकी पालकी रोकी, क्योंकि अनुमति नहीं थी। इससे झड़प हुई, पुलिस ने लाठीचार्ज किया। स्वामी ने कैम्प के बाहर धरना शुरू किया, भोजन-जल त्याग दिया। 20 जनवरी को प्रशासन ने नोटिस दिया, जिसमें 'शंकराचार्य ज्योतिषपीठ' का बोर्ड लगाने पर सवाल किया। नोटिस में सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला दिया, कि पद पर विवाद है। स्वामी ने जवाब दिया कि शंकराचार्य कौन है, यह प्रशासन या मुख्यमंत्री नहीं तय करेगा, बल्कि शंकराचार्य ही। उन्होंने योगी सरकार पर हमला किया, कहा कि यह उनके आलोचना से बदला है।

कांग्रेस के पवन खेड़ा और अखिलेश यादव ने समर्थन दिया, कहा कि भाजपा आलोचना बर्दाश्त नहीं करती। प्रवीण तोगड़िया ने योगी से मिलने की सलाह दी। भाजपा चुप है। यह घटना पुराने विवाद को फिर जिंदा कर रही है। स्वामी पहले राम मंदिर, केदारनाथ सोना घोटाला और गौ रक्षा पर बोल चुके हैं। क्या यह राजनीतिक है या धार्मिक? यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि संतों की आवाज को कैसे सुना जाए, बिना दबाव के। विवाद से मेला प्रभावित हुआ, लेकिन शायद बातचीत से हल निकले।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 26 जनवरी 2026 , विक्रम संवत 2080

शंकराचार्य विवाद से UGC बदलाव तक

वर्तमान भारत में दो घटनाएं बहुत चर्चित हुई है पहली है शंकराचार्य अवि मुक्तेश्वर आनंद का टकराव और दूसरी घटना है यूजीसी में कुछ बदले गए नियम। दोनों ही घटनाओं पर मैंने गंभीरता से सोचा है अभी मुक्तेश्वर आनंद की घटना के संबंध में मैं स्पष्ट हूं कि मैं संघ के साथ हूं अभी मुक्तेश्वर आनंद और संघ परिवार के बीच जो पुराना टकराव है उस टकराव में मैं संघ के पक्ष में हूं। यह टकराव शुद्ध राजनीतिक है इसमें धर्म या समाज का कोई लेना-देना नहीं है । यूजीसी का जो मामला है इस संबंध में मैं अभी स्पष्ट नहीं हूं क्योंकि सैद्धांतिक रूप से मैं किसी भी प्रकार के आरक्षण के खिलाफ हूं और व्यावहारिक धरातल पर अब तक मेरा यही मानना है कि नरेंद्र मोदी मोहन भागवत और योगी आदित्यनाथ मिलकर जो निर्णय करेंगे मैं उसके साथ रहूंगा। अब तक इस मामले में सरकार संघ परिवार योगी आदित्यनाथ ने साफ-साफ कोई लाइन नहीं ली है इसलिए मैं भी इस संबंध में कुछ नहीं कह सकता। यूजीसी के इस कानून ने विपक्ष को भी साफ बोलने से संकट में डाल दिया है और सत्ता पक्ष को भी। यदि यह कानून इस संबंध में किसी नई दिशा को तय कर पाता है मेरे विचार से अच्छा ही होगा। आरक्षण के मसले पर गंभीर चर्चा तो होनी ही चाहिए

बजरंग मुनि

बराबरी की मंशा या नए असंतुलन की शुरुआत?

@ **अनुराग पाठक**

यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन के नए नियमों ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या भारत में समानता की नीति अब संतुलन खोती जा रही है। शिक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में लागू किए गए ये नियम सिर्फ प्रशासनिक बदलाव नहीं हैं, बल्कि इनके सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ भी गहरे हैं। यही वजह है कि नई दिल्ली से लेकर उत्तर प्रदेश के कई जिलों तक विरोध की आवाज़ सुनाई दे रही है और मामला अब सड़कों से सुप्रीम कोर्ट की चौखट तक पहुंच चुका है।

UGC ने 13 जनवरी को 'प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन्स, 2026' को अधिसूचित किया। नाम से ही साफ है कि मकसद शिक्षा संस्थानों में बराबरी और भेदभाव की समाप्ति बताया जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह बराबरी सभी के लिए समान रूप से परिभाषित की गई है, या फिर यह एक वर्ग-विशेष के लिए अतिरिक्त सुरक्षा और दूसरे वर्ग के लिए अतिरिक्त संदेह का माहौल तैयार कर रही है।नए नियमों के तहत विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में ऐसी समितियां और निगरानी तंत्र बनाए जाएंगे, जो मुख्य रूप से SC, ST और OBC वर्ग से जुड़े भेदभाव के मामलों को देखेंगे। UGC का तर्क है कि इससे जवाबदेही बढ़ेगी और कैंपस में वंचित वर्ग के छात्रों को सुरक्षित वातावरण मिलेगा। यह तर्क अपनी जगह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भी सच है कि देश के कई शिक्षण संस्थानों में आज भी जाति आधारित भेदभाव की शिकायतें सामने आती रही हैं।

लेकिन विरोध की जड़ यहीं से शुरू होती है। जनरल कैटेगरी और सवर्ण समाज से जुड़े छात्रों और संगठनों का कहना है कि नियमों की संरचना एकतरफा है। उनका आरोप है कि नए ढांचे में उन्हें पहले से ही संभावित दोषी मान लिया गया है। खास तौर पर झूठी शिकायत पर सजा के प्रावधान को अंतिम नियमों से हटाया जाना इस आशंका को और गहरा करता है। ड्राफ्ट में जहां झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायत पर दंड का प्रावधान था, वहीं फाइनल नियमों में इसे पूरी तरह हटा दिया गया है। यही बिंदु इस पूरे विवाद का सबसे संवेदनशील पहलू बन गया है।शिक्षा का परिसर विचारों का मुक्त मंच होना चाहिए, न कि डर और संदेह का क्षेत्र। अगर किसी भी व्यवस्था में संतुलन न हो, तो वह अपने उद्देश्य से भटकने लगती है। विरोध कर रहे छात्रों का डर यह है कि अगर शिकायत करने वाले पर कोई जवाबदेही नहीं होगी, तो इसका दुरुपयोग भी संभव है। इससे न सिर्फ पढ़ाई का माहौल खराब होगा, बल्कि शिक्षक-छात्र संबंधों और आपसी विश्वास पर भी असर पड़ेगा।

इस विरोध ने राजनीतिक रंग भी ले लिया है। रायबरेली में सवर्ण सांसदों को प्रतीकात्मक चूड़ियां भेजे जाने की घटना हो या बरेली में एक सिटी मजिस्ट्रेट का इस्तीफा, ये घटनाएं बताती हैं कि असंतोष केवल छात्र स्तर तक सीमित नहीं है। सोशल मीडिया पर कुमार विश्वास जैसे सार्वजनिक चेहरों की टिप्पणियों ने बहस को और तेज किया है। यह सब संकेत देते हैं कि मामला अब सिर्फ UGC के नियमों का नहीं, बल्कि सामाजिक मनोविज्ञान का बन चुका है।

अब यह विवाद सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है। याचिका में कहा गया है कि ये नियम जनरल कैटेगरी के छात्रों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और शिक्षा संस्थानों में समानता के सिद्धांत के खिलाफ हैं। अदालत में यह बहस तय करेगी कि समानता का अर्थ केवल ऐतिहासिक अन्याय की भरपाई है या फिर वर्तमान में सभी के लिए समान नियमों की गारंटी भी।सरकार और UGC का पक्ष है कि इन नियमों को गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। उनका कहना है कि ये नियम दंडात्मक नहीं, बल्कि सुधारात्मक हैं और किसी एक वर्ग को निशाना बनाने के लिए नहीं बनाए गए हैं। लेकिन सवाल यह है कि अगर मंशा इतनी ही संतुलित है, तो झूठी शिकायत पर जवाबदेही क्यों हटाई गई। पारदर्शिता और निष्पक्षता किसी भी सुधार की आत्मा होती है।

आज जरूरत इस बात की है कि बहस को भावनाओं से निकालकर विवेक के स्तर पर लाया जाए। भेदभाव रोकना अनिवार्य है, लेकिन उसे रोकने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जो सभी वर्गों में विश्वास पैदा करे। शिक्षा का उद्देश्य समाज को जोड़ना है, न कि नई दरारें पैदा करना।UGC के नए नियमों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि सामाजिक न्याय और समानता के बीच संतुलन साधना आसान नहीं है। आने वाले दिनों में सरकार और आयोग के लिए यह परीक्षा की घड़ी होगी कि वे इस असंतोष को संवाद और संशोधन के जरिए कैसे संभालते हैं। क्योंकि अगर शिक्षा नीति ही अविश्वास का कारण बन जाए, तो उसका असर आने वाली पीढ़ियों पर दूरगामी होगा।

जुबानी तीर

मैं अभागा सवर्ण हूं, बराबरी के नाम पर अगर मुझे ही कटघरे में खड़ा किया जाएगा, तो इसे न्याय नहीं कहा जा सकता।

कुमार विश्वास (कवि व सामाजिक टिप्पणीकार)

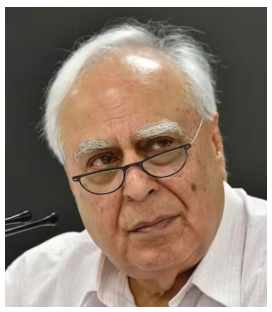

किसी भी कानून में अगर संतुलन नहीं होगा और दुरुपयोग से बचाने का प्रावधान नहीं होगा, तो वह न्याय की भावना के खिलाफ जाएगा।

कपिल सिब्बल (वरिष्ठ अधिवक्ता व राज्यसभा सांसद)

UGC के नए नियमों का उद्देश्य किसी वर्ग को निशाना बनाना नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा संस्थानों को भेदभाव-मुक्त और सुरक्षित बनाना है।

धर्मेंद्र प्रधान (केंद्रीय शिक्षा मंत्री)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सर्वाइकल दर्द का आयुर्वेदिक इलाज

बिना सर्जरी, बिना साइड इफेक्ट राहत की राह

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, घंटों मोबाइल और लैपटॉप पर काम, गलत बैठने की आदत और तनाव ने एक बीमारी को तेजी से आम बना दिया है — सर्वाइकल। पहले यह समस्या उम्र बढ़ने के साथ देखी जाती थी, लेकिन अब 25–30 साल की उम्र में ही लोग गर्दन दर्द, कंधों में जकड़न और सिरदर्द से परेशान नजर आते हैं।एलोपैथी में जहां दर्द निवारक दवाइयों, फिजियोथेरेपी और गंभीर मामलों में सर्जरी की सलाह दी जाती है, वहीं आयुर्वेद सर्वाइकल को जड़ से ठीक करने की बात करता है। आयुर्वेद का मानना है कि अगर शरीर के दोष संतुलित कर दिए जाएं, तो दर्द खुद ही खत्म हो जाता है।

सर्वाइकल क्या है, इसे आसान भाषा में समझें

सर्वाइकल स्पॉन्डिलोसिस गर्दन की हड्डियों और डिस्क से जुड़ी समस्या है। हमारी गर्दन में सात हड्डियां होती हैं, जिन्हें सर्वाइकल वर्टिब्रा कहा जाता है। जब इनमें घिसाव, सूजन या नसों पर दबाव बढ़ता है, तो दर्द शुरू हो जाता है।

इसके लक्षण सिर्फ गर्दन तक सीमित नहीं रहते। कई बार दर्द कंधों, हाथों और सिर तक फैल जाता है। उंगलियों में झनझनाहट, हाथों में कमजोरी और चक्कर आना भी इसके संकेत हो सकते हैं।

आयुर्वेद में सर्वाइकल का कारण

आयुर्वेद के अनुसार सर्वाइकल मुख्य रूप से वात दोष के बिगड़ने से होता है। जब शरीर में वात बढ़ जाता है, तो जोड़ों में सूखापन, दर्द और जकड़न आने लगती है।गलत खान-पान, देर रात तक जागना, ठंडा और बासी भोजन, ज्यादा तनाव और शारीरिक गतिविधि की कमी वात को बढ़ा देती है। यही वात गर्दन की हड्डियों और नसों को प्रभावित करता है।

आयुर्वेदिक इलाज की खासियत

आयुर्वेदिक इलाज सिर्फ दर्द दबाने का काम नहीं करता, बल्कि बीमारी की वजह को खत्म करने की कोशिश करता है। इसमें तीन स्तरों पर इलाज होता है —

दवाइयों से दोष संतुलन

पंचकर्म से शरीर की सफाई

योग और दिनचर्या से दोबारा बीमारी रोकना

यही वजह है कि आयुर्वेद में इलाज थोड़ा समय लेता है, लेकिन राहत लंबे समय तक रहती है।

सर्वाइकल में उपयोगी आयुर्वेदिक दवाएं

आयुर्वेद में कई ऐसी औषधियां हैं जो सर्वाइकल दर्द में कारगर मानी जाती हैं।

महायोगराज गुग्गुल – यह जोड़ों के दर्द और नसों की सूजन को कम करता है।

अश्वगंधा – नसों को मजबूत करता है और तनाव घटाता है।

रसना एरंडादि काढ़ा – वात दोष को संतुलित करता है और जकड़न दूर करता है।

त्रयोदशांग गुग्गुल – गर्दन और कंधों के पुराने दर्द में उपयोगी।

इन दवाओं का सेवन हमेशा किसी योग्य आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिए।

पंचकर्म थेरेपी: आयुर्वेद की ताकत

सर्वाइकल के इलाज में पंचकर्म का विशेष महत्व है। इसमें शरीर के अंदर जमे दोषों को बाहर निकाला जाता है।

ग्रीवा बस्ती – गर्दन के हिस्से पर औषधीय तेल से भरी विशेष बस्ती बनाई जाती है। इससे नसों को पोषण मिलता है और दर्द में तेजी से राहत मिलती है।

अभ्यंग – औषधीय तेल से पूरे शरीर की मालिश, जिससे वात शांत होता है।

स्वेदन – भाप चिकित्सा, जो जकड़ी हुई मांसपेशियों को ढीला करती है।

कई मरीजों को पंचकर्म से 15–21 दिनों में ही फर्क महसूस होने लगता है।

योग और प्राणायाम की भूमिका

आयुर्वेद मानता है कि बिना योग के इलाज अधूरा है। कुछ आसान योगासन सर्वाइकल में बेहद फायदेमंद होते हैं।

भुजंगासन – गर्दन और रीढ़ की मजबूती बढ़ाता है।

मार्जारी आसन – गर्दन और पीठ की अकड़न दूर करता है।

ताड़ासन – शरीर का संतुलन सुधारता है।

प्राणायाम में अनुलोम-विलोम और भ्रामरी तनाव कम करते हैं, जिससे दर्द भी घटता है।

खान-पान में करें ये बदलाव

आयुर्वेदिक इलाज तब ही सफल होता है, जब खान-पान सही हो।

गर्म और हल्का भोजन करें।

घी, दूध और दलिया को आहार में शामिल करें।

बहुत ठंडा, तला-भुना और बासी खाना कम करें।

दिन में पर्याप्त पानी पिएं, लेकिन बर्फ वाला पानी न लें।

ये छोटे बदलाव वात दोष को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

काम करने का सही तरीका भी जरूरी

लंबे समय तक एक ही पोजीशन में बैठना सर्वाइकल का बड़ा कारण है।

हर 30–40 मिनट में ब्रेक लें।

मोबाइल आंखों की सीध में रखें, गर्दन झुकाकर न देखें।

सोते समय बहुत ऊंचा या बहुत सख्त तकिया न इस्तेमाल करें।

ये आदतें इलाज के साथ-साथ भविष्य में सर्वाइकल से बचाव करती हैं।

कब सावधानी ज्यादा जरूरी है

अगर गर्दन दर्द के साथ हाथों में कमजोरी, सुन्नपन या तेज चक्कर आने लगे, तो इलाज में देरी नहीं करनी चाहिए। ऐसे मामलों में आयुर्वेदिक और आधुनिक जांच दोनों जरूरी हो सकती हैं।

आयुर्वेद यह नहीं कहता कि आधुनिक चिकित्सा गलत है, बल्कि दोनों के संतुलन से बेहतर नतीजे मिलते हैं।सर्वाइकल आज की जीवनशैली की देन है, लेकिन इसे जीवन भर की सजा बनने देना जरूरी नहीं। आयुर्वेदिक इलाज, सही दिनचर्या, योग और संयमित जीवनशैली अपनाकर इस समस्या से स्थायी राहत पाई जा सकती है।

दर्द से राहत के लिए सिर्फ दवाइयों पर निर्भर रहने की बजाय, अगर शरीर की भाषा को समझा जाए, तो सर्वाइकल जैसी समस्या को जड़ से खत्म किया जा सकता है। यही आयुर्वेद की असली ताकत है — बीमारी नहीं, इंसान का इलाज।

संत उड़िया बाबा: भक्ति और आत्मज्ञान के साक्षात्कार

संत उड़िया बाबा उन महान आत्माओं में से एक थे, जो बाहरी दुनिया की हलचलों से जरा भी विचलित नहीं होते। वे आत्मा के सौंदर्य, भीतरी शांति और परमात्मा की कृपा के प्रकाश में अनंत जीवन की यात्रा करते रहे। उड़िया बाबा ने आत्मा के रस और परमात्मा के आनंद की भूमि पर स्वरूप का दर्शन किया। वे उच्च कोटि के सिद्ध संत थे। उनके दिव्य जीवन में तप, भक्ति और ज्ञान तीनों का समान महत्व था। वे आत्मानंदी और भगवद् रसिक संत थे। विक्रमी संवत की 20वीं शताब्दी में वृंदावन को अपनी उपस्थिति, भक्ति और सिद्धि से और अधिक सुशोभित किया। असंख्य जीवों को दिव्य आत्मज्ञान के प्रकाश में भगवद् रस का स्वाद चखाया। यही उनकी महत्ता और ऐतिहासिकता है। उड़िया बाबा ने 20वीं शताब्दी के भारत को कर्म, भक्ति और ज्ञान तीनों की जरूरत बताई। उन्होंने उपदेश दिया कि जीवन का संतुलन इन तीनों के समन्वय से ही आता है। उन्होंने कहा कि जीव संसार में भगवद् प्रेम की प्राप्ति के लिए आता है। प्रेम उसका स्वाभाविक धर्म है। वह बिना प्रेम किए रह ही नहीं सकता। प्रेमस्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार ही भजन का फल है। यही उनका जगत को संदेश था।

प्राकट्य और बाल्यावस्था

संत उड़िया बाबा का प्राकट्य परम पवित्र भागवत कुल में हुआ। यह बात लगभग 500 साल पहले की है। चैतन्य महाप्रभु के अनन्य प्रेमी और भगवद् भक्ति के रसिक महाराजा गजपति प्रताप रुद्र उड़ीसा प्रदेश के एकछत्र अधिपति थे। उनके कुल गुरु काशीमिश्र परम भागवत थे। काशी मिश्र का परिवार उड़ीसा में परम पवित्र माना जाता था। इस परिवार के लोग हमेशा नंगे पांव रहते और बैलगाड़ी से यात्रा नहीं करते। काशी मिश्र के वैष्णव कुल पर कुछ दिनों बाद शाक्त मत का रंग चढ़ गया। इसी वंश में अभी 100 साल पहले वैद्यनाथ मिश्र का जन्म हुआ। वे बड़े धर्मनिष्ठ और महान भगवद् भक्त थे। उनकी पत्नी लक्ष्मी देवी बड़ी सती-साध्वी थी। दोनों की उपस्थिति से घर में भगवद् भक्ति लहलहा उठी। संवत 1932 के भादो मास में कृष्णाष्टमी को भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव मिश्र दंपति धूमधाम से मना रहे थे। उसी पवित्र अवसर पर लक्ष्मीदेवी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उत्सव के सौंदर्य में पुत्र प्राप्ति से दिव्य बढ़ोतरी हुई। यही संत उड़िया बाबा के प्राकट्य की ऐतिहासिकता है। तीन ही दिनों बाद उड़िया बाबा की माता भक्तिमती लक्ष्मीदेवी ने स्वर्ग यात्रा की। पिता वैद्यनाथ मिश्र ने पुत्र का नाम आर्तत्राण मिश्र रखा। उनके छोटे भाई प्रभाकर मिश्र की पत्नी ने आर्तत्राण (उड़िया बाबा) का बड़े प्रेम से माता के समान पालन-पोषण किया और वात्सल्य रस का आस्वादन किया। आर्तत्राण मिश्र का बाल सौंदर्य विलक्षण था। वे देखने में तपस्वी लगते। प्रायः उनकी आंखें बंद रहतीं। स्वभाव गंभीर और शांत था। लोग उन्हें देखते ही मुग्ध हो जाते और उनके स्पर्श से ब्रह्मानंद का अनुभव करते। उनका बचपन नितांत दिव्य था।

शिक्षा और वैराग्य का उदय

जब वे 4 साल, 4 मास और 4 दिन के हुए, उनका उपनयन संस्कार हुआ। वे बड़े प्रतिभाशाली थे। एक गणक ने घर पर ही उन्हें शिक्षा देना शुरू किया। वे उड़िया भाषा, संस्कृत और गणित में पारंगत हो गए। 12 साल की उम्र में शिक्षा के लिए वे बालेश्वर होते हुए मयूरभंज आए। मयूरभंज में एक संस्कृत पाठशाला थी। उसके आचार्य पद्मनाभाचार्य वैद्यनाथ मिश्र के पुराने परिचित थे। आर्तत्राण मिश्र (उड़िया बाबा) ने पाठशाला में प्रवेश किया, लेकिन उनके मन में आशंका बनी रही कि कहीं आचार्य उनके पिता को सूचित न कर दें। उन्हें मयूरभंज छोड़ना पड़ा। वे बाल्यावेड़ा चले आए। राजा कृष्णचंद्र के विद्यालय में उन्होंने अध्ययन शुरू किया और काव्यतीर्थ की योग्यता जल्दी प्राप्त कर ली। बाल्यावेड़ा की एक घटना से उनका जीवन बदल गया। उन्होंने वैराग्य के साम्राज्य में प्रवेश किया। राजा कृष्णचंद्र वैष्णव थे। उनके आराध्य भगवान गोपीनाथ थे। गोपीनाथ के मंदिर में हर साल कार्तिक शुक्ल नवमी से पूर्णिमा तक उत्सव होता था। उस समय आर्तत्राण बाल्यावेड़ा में थे। उत्सव में शामिल होने के लिए कलकत्ता से बाल-संगीत नाम की एक मंडली आई। मंडली भगवान कृष्ण की लीला कर रही थी। ब्रह्मा द्वारा गोप-वत्सहरण का प्रसंग था। आर्तत्राण मिश्र तल्लीन होकर ब्रह्ममोह की लीला देख रहे थे। उनके रोम-रोम में दिव्यता का सागर लहरा उठा। वे बाहरी ज्ञान से शून्य हो गए। जन्म-जन्म के दिव्य संस्कार जाग उठे। भगवत् संबंध का परिज्ञान हुआ। वे अपने निवास पर आए। तीन दिन-तीन रात तक वे भगवत् लीला चिंतन में लीन रहे। सात्विक भावों के राज्य में विचरते रहे। प्रकृतिस्थ होने पर हृदय ने वैराग्य के अभय पद की खोज की। सत्य अन्वेषण और आत्मसाक्षात्कार के लिए वे कटिबद्ध हो गए। अध्ययन समाप्त कर वे घर आए। अदृश्य दिव्य शक्तियों में उनका विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। साधु-संतों की सेवा, लोकहित और शुभ कर्मों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट हो गया। जागतिक सुख की नश्वरता और संबंध की अनित्यता उन्हें माया जाल में नहीं फंसा सकी। जब वे केवल 19 साल के थे, उड़ीसा में भीषण अकाल पड़ा। लोगों को भूखे मरते देख उड़िया बाबा का हृदय हाहाकार कर उठा। उन्होंने सोचा कि लोगों को इस दुख से मुक्त करने का उपाय एक है कि भगवती कामाख्या के मंदिर में मंत्रानुष्ठान किया जाए। इससे देवी प्रसन्न होंगी और दुख दूर होगा। वे घर से एक धोती, लोटा और 11 रुपये लेकर गोहाटी कामाख्या देवी के मंदिर के लिए चल पड़े। उन्होंने देवी के दरवाजे पर मंत्रानुष्ठान किया। इस प्रकार उनके कोमल हृदय में लोकहित की भावना जागी। देवी ने स्वप्न में दर्शन दिए। इसी समय उन्हें पूर्णगिरि नामक एक महात्मा का सत्संग लाभ हुआ। उनसे उन्होंने शंकराचार्यकृत विवेकचूड़ामणि की व्याख्या सुनी। वेदांतवेद्य ब्रह्मानंद रस में उनका मन मग्न हो गया। कुछ दिनों तक मयूरभंज में ठहर कर वे काशी चले आए। मणिकर्णिका घाट के पास एक छोटी गुफा में निवास कर वे भगवद् भजन और तप करने लगे। वैराग्य का रसास्वादन उनके तप का प्रधान अंग बन गया। अन्नपूर्णा और विश्वनाथ का दर्शन उनके जीवन का आधार हो गया। उनकी भाषा लोग समझ नहीं पाते थे। उन्होंने अयाचक वृत्ति से तप शुरू किया। तीन दिन-तीन रात तक बिना अन्न-जल के रहे। चौथे दिन स्नान करने निकले तो एक स्त्री ने पंचामृत पान कराया। उसके बाद उन्होंने विश्वनाथ का दर्शन किया। काशी से वे वैद्यनाथ धाम आए। उन्होंने सरस्वती सिद्ध करने का संकल्प किया। बाद में विचार किया कि सरस्वती सिद्ध होने का फल पांडित्य की वृद्धि है। उन्होंने तो तत्वज्ञान और परमात्मा प्राप्ति के लिए तप का व्रत लिया है। वे आत्मान्वेषण में लग गए। संसारिक

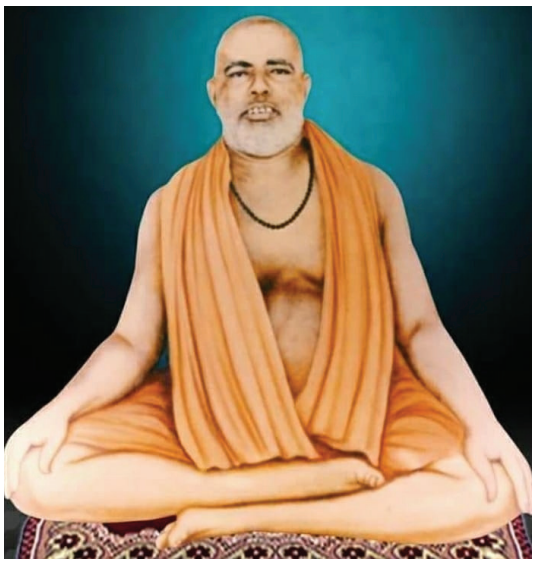

संबंध और विषय में उनकी अनासक्ति बढ़ती गई। ज्यों-ज्यों मन में वैराग्य उदय होता गया, त्यों-त्यों संसार का नश्वर रूप सामने आता गया।

गुरु खोज और सन्यास दीक्षा

वे गुरु की खोज में लग गए। वैद्यनाथ धाम से घर आए, लेकिन ज्यादा दिनों तक ठहर न सके। घर से वे पुरी आए। पुरी में गोवर्धन मठ के शंकराचार्य मधुसूदन तीर्थ से दीक्षा ली। आर्तत्राण से उनका नाम चेतनानंद हो गया। सिद्ध गुरु की खोज में उन्होंने बड़पेटा की यात्रा की। बड़पेटा में कालियकांत का मंदिर है। नगर के बाहर शिवालय है। इस पवित्र नगर में मंदिर के ब्रह्मचारी महंत की सेवा की। महंत के देहावसान के बाद उन्हें मंदिर का उत्तराधिकार मिला। उन्हें वाक्सिद्धि प्राप्त हो गई। लोग दूर-दूर से दर्शन करने आते। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से उनके मुखमंडल की आभा से मुग्ध होकर असंख्य प्राणी उनके चरणों में नत होने लगे। लेकिन चेतनानंद (उड़िया बाबा) के लिए मान-सम्मान कांटे जैसे खटकने लगे। महंत के शिष्य के लौटने पर उन्होंने पद का दायित्व उसके कंधों पर रख दिया। केवल 15 रुपये लेकर सिद्ध गुरु की खोज में निकल पड़े। सारे भारत की तीर्थयात्रा का निश्चय किया, लेकिन दैवयोग से वे पुरी आए। इस समय उनकी उम्र 32 साल की थी। उन्होंने गोवर्धन मठ के शंकराचार्य से सन्यास दीक्षा लेने का निश्चय किया। मठाधीश ने उन्हें सन्यास दीक्षा दी और चेतनानंद से नाम पूर्णानंद तीर्थ रख दिया। धीरे-धीरे एक सन्यासी के रूप में पूर्णानंद तीर्थ की ख्याति बढ़ने लगी। वे उड़िया बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए। यही उड़िया बाबा के पूर्वाश्रम की ऐतिहासिकता है।

तपोमय जीवन और आत्मसाक्षात्कार

पुरी से उन्होंने पूर्ण तपोमय जीवन में प्रवेश किया। उन्होंने आत्मज्ञान और सच्चिदानंद के रसास्वादन के लिए अखंड त्याग वरण किया। पुरी से काशी के लिए प्रस्थान करते समय उड़िया बाबा ने सन्यास का दंड समुद्र में फेंक दिया। रेल गाड़ी से काशी की यात्रा की। रास्ते में एक घटना ने उनके सन्यस्त जीवन में विशेष परिवर्तन लाया। रेल गाड़ी तेजी से काशी की ओर बढ़ रही थी। रात का समय था। उड़िया बाबा की आंख लग गई। वे गाड़ी बदल न सके। काशी के बजाय छपरा पहुंच गए। टिकट निरीक्षक ने उन्हें गाड़ी से उतार दिया। छपरा में उड़िया बाबा ने घाघरा में स्नान किया और पैदल चलने का व्रत लिया। संकल्प किया कि वाहन पर कभी नहीं बैठूंगा। काशी पहुंचने पर उन्होंने 4 मील की दूरी पर कुछ संतों के संपर्क में चारमास का निवास निभाया। सामान नाम की कोई वस्तु उनके पास नहीं थी। केवल कम्बल लपेटे एक गुफा में पड़े रहते। गंगा तट पर विचरण करते वे प्रयाग गए। प्रयाग में कुछ समय रह कर आगे बढ़ने का निश्चय किया। फतेहपुर पहुंचने पर शाम हो गई। आसमान लाल हो गया। सूर्य अस्त हो चुके थे। भगवती भागीरथी का जल सरस कलकल उत्पन्न कर रहा था। उन्होंने शाश्वत शांति के लिए गंगा माता की गोद में निवास करने का विचार किया। प्राण समर्पित करने का निश्चय किया। चादर और तुम्बा अलग रख कर गंगा की स्वच्छ गोद में आत्मार्पण करने वाले थे कि उनका अंतर्देश दिव्य ज्योति से भर उठा। रोम-रोम में सच्चिदानंद की रमणीयता समा गई। एक रहस्यमयी चेतना ने मन पर प्रभाव डाला कि इस प्रकार प्राण समर्पित करने से तत्व का साक्षात्कार नहीं होता। थोड़ी दूर पर गंगातट पर ही एक शिवालय था। उड़िया बाबा ने शिवालय में प्रवेश किया। उन्हें उसमें दो परमहंसों का सत्संग मिला। गंगा माता और भगवान शिव की कृपा ज्योति में उन्हें आत्मज्ञान मिला। सच्चिदानंद का ज्ञान हुआ। उन्हें सत्स्वरूप आत्मा की सत्ता में परमात्मा के अभय पद का दर्शन हुआ। उन्होंने यात्रा का क्रम अक्षुण्ण रखा। कानपुर और बिठूर होते हुए बरुआ घाट आए। ज्ञानाश्रम नामक एक सन्यासी से सत्संग हुआ। फर्रुखाबाद से आगे बढ़ने पर शाम हो गई। नहर के किनारे-किनारे उड़िया बाबा गंगातट की यात्रा पूरी कर रहे थे। चारों ओर चांदनी फैली थी। निर्जनता का एकछत्र साम्राज्य था। भूख से शरीर शिथिल था। दो लड़के दिख पड़े।

सिद्धियां और भक्ति उत्सव

संत उड़िया बाबा बड़े क्षमाशील, दयालु और उदार थे। सिद्धियां उनके चरणों की दासी थीं। कभी-कभी हरिबाबा उनसे मिलने आते। हरिबाबा के नाते माता आनंदमयी से भी उड़िया बाबा की भेंट होती रहती। संवत 2004 की बात है। हरिबाबा ने होली का रंगोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाने का निश्चय किया। अनूपशहर वाले बांध पर आनंदमयी भी उत्सव में शामिल होने पहुंच गईं। लेकिन उड़िया बाबा स्वास्थ्य अच्छा न होने से नहीं जा सके। हरिबाबा और आनंदमयी ने उन्हें ले जाने के लिए मोटर से वृंदावन की यात्रा की। हरिबाबा ने उड़िया बाबा से कहा कि मैं आपको मोटर से उत्सव में ले चलूंगा। संत उड़िया मौन थे। उनका सवारी पर बैठने का नियम नहीं था। उड़िया महाराज ने प्रेम के सम्मुख रुग्णावस्था में नियम तोड़ दिया। वे रात को चुपके से बिना हरिबाबा या किसी को बताए मोटर से उत्सव स्थल पहुंच गए। धूमधाम से संत उड़िया की उपस्थिति में रंगोत्सव हुआ। उत्सव से लौटने पर अस्वस्थ दशा में ही उड़िया महाराज ने रासलीला मंडली के साथ पंजाब भ्रमण की योजना बनाई। सवारी का नियम टूट चुका था, इसलिए यात्रा सुगम हुई। स्थान-स्थान पर परम पवित्र रासलीला से महाराज ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। वे लीला रसिक संत थे। वृंदावन लौटने पर उनका स्वास्थ्य गिरता गया। संत उड़िया का चैतन्य महाप्रभु की जीवन लीला के प्रति बड़ा अनुराग था। हरिबाबा के सान्निध्य में बड़ी धूमधाम से उड़िया महाराज के पंजाब से लौटने पर चैतन्य महाप्रभु का जन्मोत्सव मनाया गया।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

कुत्तों के हमले: पुरुष क्यों बनते हैं ज्यादा निशाना? जान बचाने के आसान तरीके

कुत्तों के हमले एक बड़ी समस्या बन गए हैं, और हाल की रिपोर्ट्स बताती हैं कि पुरुष महिलाओं की तुलना में ज्यादा शिकार होते हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध ताजा जानकारी के मुताबिक, पुरुषों पर कुत्तों के हमले 1.8 गुना ज्यादा होते हैं, और 70% से ज्यादा पीड़ित पुरुष ही होते हैं। अमेरिका में 2025 की स्टेटिस्टिक्स से पता चलता है कि हर साल हजारों लोग कुत्तों के काटने से घायल होते हैं, और पुरुषों की संख्या महिलाओं से ज्यादा है। उदाहरण के लिए, ईआर में पुरुषों का रेट 110 प्रति 100,000 है, जबकि महिलाओं का 98। यह फर्क क्यों है? विशेषज्ञ कहते हैं कि कुत्ते पुरुषों से ज्यादा डरते हैं क्योंकि पुरुषों की चाल ज्यादा जोरदार और आगे की ओर लगती है, जो कुत्तों को लगता है कि वे हमला करने आ रहे हैं। महिलाओं की चाल पीछे हटने वाली लगती है, इसलिए कुत्ते उनसे कम डरते हैं। इसके अलावा, पुरुषों की आवाज गहरी होती है, और वे ज्यादा सीधे तरीके से कुत्तों के पास जाते हैं, जो कुत्तों को डराता है। डर से कुत्ते रक्षात्मक हो जाते हैं और हमला कर सकते हैं। हाल के सालों में पिट बुल जैसे नस्लों के हमलों में महिलाओं की संख्या बढ़ी है, लेकिन कुल मिलाकर पुरुष ज्यादा प्रभावित होते हैं। 2025 में अमेरिका में रिकॉर्ड हमले हुए, जहां पिट बुल ने सबसे ज्यादा मौतें कीं। भारत में भी सड़क पर घूमने वाले कुत्तों से पुरुष ज्यादा प्रभावित होते हैं क्योंकि वे बाहर ज्यादा समय बिताते हैं। यह सोचने वाली बात है कि क्या हमारा व्यवहार कुत्तों को उकसाता है? अगर हम कुत्तों की भावनाओं को समझें, तो कई हमलों को रोका जा सकता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या समाज में कुत्तों को बेहतर तरीके से संभालने की जरूरत है? ताजा रिसर्च बताती है कि कुत्तों को बचपन से पुरुषों के साथ सही सोशलाइजेशन न मिलने से यह समस्या बढ़ती है। अगर कुत्ते पुरुषों को सकारात्मक तरीके से देखें, जैसे खेल या ट्रीट से, तो डर कम हो सकता है। कुल मिलाकर, यह फर्क सिर्फ लिंग का नहीं, बल्कि व्यवहार और एक्सपोजर का है। हमें सोचना चाहिए कि क्या हम कुत्तों के साथ सही तरीके से व्यवहार कर रहे हैं?

कुत्ते पुरुषों पर क्यों करते हैं ज्यादा हमला?

डर और व्यवहार के कारण

कुत्तों के हमलों में डर एक बड़ा कारण है, और रिसर्च दिखाती है कि कुत्ते पुरुषों से ज्यादा डरते हैं। पैट्रिशिया मैककॉनेल जैसे विशेषज्ञों के मुताबिक, पुरुषों की चलने की स्टाइल में कूल्हों की मूवमेंट ज्यादा आगे की ओर लगती है, जो कुत्तों को लगता है कि वे करीब आ रहे हैं। महिलाओं की मूवमेंट पीछे हटने वाली लगती है, इसलिए कुत्ते शांत रहते हैं। यह बात पॉइंट-लाइट स्टडी से साबित हुई है, जहां सिर्फ मूवमेंट से कुत्ते पुरुषों को डरावना मानते हैं। इसके अलावा, पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन की गंध ज्यादा होती है, जो कुत्तों को उत्तेजित कर सकती है। महिलाओं में एस्ट्रोजन की गंध शांत करने वाली होती है। अगर कुत्ता पहले किसी पुरुष से बुरा व्यवहार झेल चुका है, तो वह सभी पुरुषों से डरता है। लेकिन कई मामलों में बिना नेगेटिव अनुभव के भी ऐसा होता है। यह डर आक्रामकता में बदल जाता है, जहां कुत्ता भौंकता, भागता या काटता है। 2025 की रिपोर्ट्स में पिट बुल हमलों में महिलाओं की संख्या 53.8% तक पहुंची, लेकिन कुल बाइट्स में पुरुष ज्यादा। क्या वजह है? पुरुष ज्यादा चिढ़ाते हैं या करीब जाते हैं, जो कुत्तों को चुनौती लगती है। महिलाएं दूरी रखती हैं। सोचिए, अगर हम कुत्तों को डराने की बजाय दोस्ताना तरीके से देखें, तो क्या फर्क पड़ेगा? ताजा जानकारी बताती है कि कुत्तों को ट्रेनिंग से यह डर कम किया जा सकता है। लेकिन समाज में आवारा कुत्तों की समस्या बड़ी है, जहां वे डर से हमला करते हैं। पुरुषों की एंग्जायटी या असुरक्षा से निकलने वाली फेरोमोन्स भी कुत्तों को आकर्षित कर सकती हैं। कुल मिलाकर, यह व्यवहारिक मुद्दा है। अगर हम कुत्तों की बॉडी लैंग्वेज समझें, जैसे कान आगे, पूंछ सख्त, तो हमले रोके जा सकते हैं। क्या हमें स्कूलों में कुत्तों के बारे में शिक्षा देनी चाहिए? यह विचार करने लायक है।

जोखिम बढ़ाने वाले कारक

पुरुषों पर ज्यादा हमले होने के पीछे कई जोखिम कारक हैं, जो उनके दैनिक जीवन से जुड़े हैं। ओबी न्यूज जैसी साइट्स पर 2025 की जानकारी से पता चलता है कि पुरुष बाहर ज्यादा समय बिताते हैं, जैसे काम पर जाते हुए या खेलते हुए, इसलिए आवारा कुत्तों से सामना ज्यादा होता है। महिलाएं घर के अंदर ज्यादा रहती हैं। इसके अलावा, पुरुष ज्यादा रिस्क लेते हैं, जैसे कुत्तों को चिढ़ाना, पत्थर मारना या करीब जाना। महिलाएं सावधानी बरतती हैं। नौकरी भी एक कारण है – कृषि, कचरा उठाना या स्ट्रीट वेंडिंग जैसे काम पुरुष ज्यादा करते हैं, जहां कुत्ते आम हैं। स्टेटिस्टिक्स दिखाती हैं कि अमेरिका में 2025 में रिकॉर्ड 48 मौतें हुईं, ज्यादातर पिट बुल से, और पुरुष ज्यादा प्रभावित। भारत में भी सड़कों पर कुत्तों से पुरुष ज्यादा घायल होते हैं। क्या यह समाज की संरचना से जुड़ा है? हां, क्योंकि पुरुषों को मजबूत माना जाता है, वे कुत्तों से नहीं डरते, लेकिन यह गलतफहमी हमले बढ़ाती है। हाल के केस में, जैसे कैटी में 2025 का हमला जहां एक आदमी मारा गया, दिखाता है कि लूज कुत्ते कितने खतरनाक हैं। कुत्तों की नस्ल भी मायने रखती है – मेल डॉग्स ज्यादा आक्रामक होते हैं टेस्टोस्टेरोन से। लेकिन विशेषज्ञ कहते हैं कि नस्ल से ज्यादा ट्रेनिंग और पर्यावरण महत्वपूर्ण है। अगर कुत्ता घर का है, तो दो या ज्यादा कुत्तों वाले घर में हमले 5 गुना ज्यादा। सोचिए, क्या हमें कुत्तों को स्टरलाइज करने पर जोर देना चाहिए? यह हमलों को कम कर सकता है। कुल मिलाकर, जोखिम कारक बदलाव से कम किए जा सकते हैं।

हमले से बचने के तरीके

कुत्तों के हमले से बचना आसान है अगर हम सही तरीके अपनाएं। ह्यूस्टन ह्यूमेन सोसाइटी के विशेषज्ञ काइमी बैर की 2025 की सलाह से पता चलता है कि सेफ्टी किट रखें – जैसे पेट करेक्टर स्प्रे (कंप्रेस्ड एयर), एयर हॉर्न, बाइट स्टिक या छाता। छाता खोलकर कुत्ते को डराया जा सकता है। कुत्ते की बॉडी लैंग्वेज पढ़ें – कान आगे, पूंछ सख्त, भौंहों पर झुर्रियां मतलब खतरा। अगर कुत्ता डरा हुआ है, जैसे पूंछ दबी, कान पीछे, तो दूर रहें। अनजान कुत्ते से कभी बात न करें, छुएं नहीं। अगर कुत्ता करीब आए, तो आंखों में न देखें, सिर झुकाएं, बॉडी साइड करें, और धीरे पीछे हटें। भागें नहीं, क्योंकि यह शिकार जैसा लगता है। शांत रहें, आवाज न बढ़ाएं। "नो" या "बैक" जैसे कमांड बोलें। अगर चलते हैं, तो व्हिसल या स्प्रे बॉटल रखें – पानी छिड़कना कुत्तों को रोक सकता है। वॉकिंग स्टिक से दूरी रखें। अगर आसपास कार या कचरा कैन है, तो उसके पीछे छिपें। सोचिए, क्या हमें पब्लिक प्लेस में कुत्तों पर कंट्रोल बढ़ाना चाहिए? ताजा टिप्स बताते हैं कि पॉजिटिव रीइनफोर्समेंट से कुत्तों को ट्रेन करें। बच्चों को अकेला न छोड़ें। कुल मिलाकर, सावधानी से कई हमले रोके जा सकते हैं।

हमला होने पर क्या करें

अगर कुत्ता हमला करे, तो सही कदम जान बचाते हैं। बर्ड डेविस लॉ फर्म की 2025 की गाइडलाइंस से पता चलता है कि लड़ें नहीं, क्योंकि इससे कुत्ता और उग्र होता है। इसके बजाय, सिर को क्रॉस्ड आर्म्स से ढकें, गेंद की तरह लेट जाएं, और शांत रहें। कुत्ता चुनौती न देखे तो छोड़ सकता है। 911 कॉल करें। अगर कुत्ता पकड़ ले, तो पेपर स्प्रे या स्टिक से बचाव करें, लेकिन आंखों या जननांग पर। हमला रुकने पर, घाव को साबुन और पानी से धोएं, और डॉक्टर से वैक्सीन लें – रेबीज से मौत हो सकती है। डब्ल्यूएचओ कहता है कि तुरंत मेडिकल हेल्प लें। हाल के केस में, जैसे 2025 के पिट बुल हमलों में, सही रिस्पॉन्स से कई बचे। सोचिए, क्या हमें कुत्तों के मालिकों पर सख्त कानून बनाने चाहिए? कुल मिलाकर, शांत रहना और मदद मांगना जरूरी है।

जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी का प्राकट्य दिवस

आस्था, अध्यात्म और संस्कृति का अद्वितीय समागम

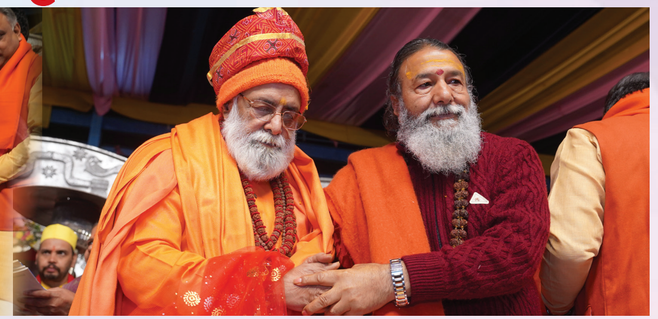

@ भारतश्री ब्यूरो

वसंत पंचमी, भारतीय संस्कृति में ऋतुओं के नव आरंभ का पर्व है,ज्ञान का उत्सव, चेतना का उत्कर्ष और नवजीवन की अनुभूति। इसी पावन दिवस पर पंचकूला ने एक अद्भुत आध्यात्मिक महोत्सव का साक्षी बना, जब 22 और 23 जनवरी को जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी का प्राकट्य दिवस बड़े हर्ष और भक्ति भाव से मनाया गया। यह दिन मात्र उत्सव नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए वह क्षण है जिसका इंतजार वे पूरे वर्ष श्रद्धा से करते हैं। आस्था का यह पर्व ज्योति दिवस के रूप में संगतों के मन में गहराई से प्रतिष्ठित है, और इस वर्ष इसकी भव्यता ने एक बार फिर अध्यात्म की विराट शक्ति का दर्शन कराया।

सालों का इंतजार और एक दिव्य क्षण

जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी का प्राकट्य दिवस संगतों के लिए किसी मंगल घटना से कम नहीं। यह वह दिन है जो साधना, सेवा और समर्पण के पथ पर चलने वाले हर भक्त के जीवन में ऊर्जा का संचार करता है। श्रद्धालु जन दूर-दराज़ इलाकों, विभिन्न राज्यों और विदेशों से इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पंचकूला पहुंचे। पूरे परिसर में भक्ति, उल्लास और दिव्यता की ऐसी लहरें थीं, मानो वातावरण स्वयं अध्यात्म की भाषा बोल रहा हो।इस बार आयोजन की विशेषता यह रही कि देश-विदेश के अनगिनत संत और महापुरुष समागम स्थल पर पहुँचे और उन्होंने जगतगुरु को शुभकामनाएँ अर्पित कर इस पावन दिवस को और अधिक महिमामय बना दिया। ख़राब मौसम भी समागम में अवरोध नहीं डाल पाया।

प्रतिष्ठित संतों की उपस्थिति ने बढ़ाई भव्यता

समागम स्थल पर पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, हिमाचल और अन्य राज्यों से अनेक संत ससम्मान उपस्थित हुए। इनमें प्रमुख रूप से महामंडलेश्वर हरि चेतनानंद जी महाराज ,स्वामी ऋषिश्वरानंद जी महाराज(चेतन ज्योति आश्रम के अध्यक्ष एवं पीठाधीश्वर),डॉ. स्वामी दिनेश्वरानंद जी महाराज (अध्यक्ष, संत समिति पंजाब एवं ब्रह्मर्षि मिशन, पिंजौर) सहित कई आदरणीय संत शामिल रहे, जिन्होंने मंच की शोभा बढ़ाई और अपने विचारों से संगत को अध्यात्म के उच्च आदर्शों से प्रेरित किया। उनकी उपस्थिति इस आयोजन की अध्यात्मिक ऊँचाई और जगतगुरु की सर्वमान्य प्रतिष्ठा का प्रमाण रही।

महामंडलेश्वर हरि चेतनानंद जी महाराज का उद्बोधन

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महामंडलेश्वर हरि चेतनानंद जी महाराज ने जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी के तप, त्याग और साधना की प्रशंसा करते हुए कहा कि जगतगुरु की साधना केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए है। वे एक दिशा हैं, एक ऊर्जा हैं, एक प्रेरणा हैं। ऐसे महापुरुष शतायु हों, यही हमारी कामना है।उनके उद्बोधन में सम्मान, श्रद्धा और अध्यात्म का अनूठा समन्वय दिखाई दिया, जिसने उपस्थित संगत को गहराई से स्पर्श किया।

भक्ति और उल्लास का संगम

ज्योति दिवस की महिमा इस रूप में विशेष है कि यह भक्तों के लिए आत्मिक जागरण का उत्सव है। वर्षों की साधना और अनगिनत कथाओं के बीच इस दिन का अपना एक अनूठा आध्यात्मिक महत्व है। संगत भक्ति के रंग में डूबी हुई थी। कोई कीर्तन में लीन था, कोई ध्यान में, तो कोई सेवा कार्यों में जुटा था।पूरे परिसर में फूलों की सजावट, मंत्रोच्चार की ध्वनि और दीपों की ज्योति ने एक ऐसा वातावरण निर्मित किया जिसने हर श्रद्धालु को भीतर तक आलोकित किया।

जगतगुरु की दिव्य उपस्थिति और भक्तों के अनुभव

जब जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी मंच पर पधारे, तो पूरा वातावरण "जय गुरुदेव", "जय ब्रह्मऋषि" जैसे जयकारों से गूँज उठा। संगतों के चेहरों पर उत्साह, प्रेम और आनंद की चमक थी। बहुत से भक्तों ने बताया कि उनके लिए यह दिन किसी आध्यात्मिक नवजीवन की तरह है—एक नई शुरुआत, नई ऊर्जा।

विशेष केक कटिंग समारोह

इस आयोजन की विशेष झलक वह क्षण था जब जगतगुरु ने ब्रह्मस्वरूपिणी रितु खुशबू जी, गुरु मां जी एवं जतिन जी के साथ मिलकर केक काटा। यह दृश्य एक आध्यात्मिक परिवार की उस एकता और प्रेम का प्रतीक था जिसमें गुरु और शिष्य के संबंध अटल विश्वास और अद्वैत भावना पर आधारित होते हैं।केक कटिंग महज एक औपचारिकता नहीं, बल्कि उस स्नेह, आत्मीयता और परिवार-भाव का उत्सव था जिसे जगतगुरु ने हमेशा अपनी संगतों के साथ जोड़ा है। उपस्थित संत समाज और संगत इस अद्भुत और भावनात्मक क्षण के साक्षी बने।

संत समाज की शुभकामनाएँ

समारोह में उपस्थित संतों ने जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी की दीर्घायु, उत्तरोत्तर प्रगति और मानवता के कल्याण हेतु निरंतर साधना की कामना की।कई संतों ने अपने संबोधन में कहा कि जगतगुरु की साधना केवल अध्यात्म तक सीमित नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग के upliftment का माध्यम है। उनकी सोच, उनके कार्य और उनकी करुणा करोड़ों लोगों के जीवन में प्रकाश बनकर आई है।इन शुभकामनाओं ने आयोजन को और भी दिव्य और प्रेरणादायी बना दिया।

दो दिवसीय आयोजन के मुख्य आकर्षण

इस दो दिवसीय उत्सव में कई आध्यात्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिनमें भक्तिमय कीर्तन,वेद मंत्रों का उच्चारण,ध्यान-सत्र, यज्ञ,गुरु-उपदेश,संगतों के अनुभव साझा करना। जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं। दोनों दिनों में हजारों भक्तों ने इसमें सहभागिता की और अपने जीवन में शांति व आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया।

आध्यात्मिक वातावरण और व्यवस्थाएँ

पूरे स्थल को आध्यात्मिक रंगों से सजाया गया था। सुरक्षा, भोजन, विश्राम तथा जल की व्यवस्थाएँ इतनी सुचारु थीं कि हर श्रद्धालु संतुष्टि और कृतज्ञता महसूस कर रहा था। सेवादारों ने अत्यंत समर्पण के साथ अपना दायित्व निभाया और यह आयोजन सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ।पंचकूला में बसंत पंचमी पर आयोजित यह प्राकट्य दिवस न केवल एक आयोजन था, बल्कि वह अध्यात्म का उत्सव था जिसमें भक्ति, श्रद्धा, भाव, ज्ञान और संस्कृति की सभी धाराएँ एक साथ प्रवाहित हुईं।जगतगुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी की दिव्य उपस्थिति, संत समाज का आशीर्वाद, और संगतों का अथाह प्रेम इस आयोजन की सफलता का आधार रहे।इस ज्योति दिवस ने एक बार फिर यह सिद्ध किया कि जहाँ गुरु होते हैं, वहाँ प्रकाश होता है; जहाँ प्रकाश होता है, वहाँ जीवन अपने श्रेष्ठतम रूप में खिल उठता है।

राष्ट्रपति भवन में यूरोप का सम्मान

भारत की वैश्विक भूमिका पर मुहर

@ सौम्या चौबे

मंगलवार की शाम राष्ट्रपति भवन का दरबार हाल एक खास कूटनीतिक संदेश का गवाह बना। यूरोपियन काउंसिल के प्रेसिडेंट एंटोनियो कोस्टा और यूरोपियन कमीशन की प्रेसिडेंट उर्सुला वॉन डेर लेयेन के सम्मान में आयोजित इस डिनर ने भारत-यूरोप रिश्तों को एक नई ऊंचाई दी। यह सिर्फ औपचारिक मुलाकात नहीं थी, बल्कि बदलती वैश्विक राजनीति में भारत की बढ़ती भूमिका और यूरोप के साथ गहराते भरोसे का प्रतीक भी थी।इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल समेत सरकार और न्यायपालिका की कई प्रमुख हस्तियां मौजूद रहीं। राष्ट्रपति भवन की भव्यता और सधे हुए शब्दों ने साफ संकेत दिया कि भारत-यूरोप संबंध अब औपचारिकता से आगे बढ़कर रणनीतिक साझेदारी की दिशा में बढ़ चुके हैं।

भारत अब ग्लोबल राजनीति के केंद्र में: उर्सुला

डिनर के दौरान यूरोपियन कमीशन की प्रेसिडेंट उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने भारत की वैश्विक भूमिका की खुलकर सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत अब वैश्विक राजनीति में शीर्ष पर पहुंच चुका है और यह एक ऐसा विकास है जिसका यूरोप खुले दिल से स्वागत करता है। उर्सुला ने कहा, "अगर यूरोप और भारत अपने संसाधनों, क्षमताओं और ताकत को एक साथ लाएं, तो बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। इसी सोच के साथ आज हम यहां साथ आए हैं।"उनके शब्दों में भारत को केवल एक उभरती शक्ति नहीं, बल्कि वैश्विक संतुलन बनाए रखने वाला अहम स्तंभ माना गया।

अनिश्चित दौर में समान सोच: राष्ट्रपति मुर्मू

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने संबोधन में मौजूदा वैश्विक हालात की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि दुनिया इस समय अनिश्चितता, संघर्ष और तनाव के दौर से गुजर रही है। ऐसे समय में भारत और यूरोप की सोच और दृष्टिकोण काफी हद तक एक जैसे हैं।राष्ट्रपति ने कहा, "हम मानते हैं कि वैश्विक चुनौतियों का सामना अकेले नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही किया जा सकता है।"उनका यह बयान जलवायु परिवर्तन, वैश्विक सुरक्षा, आर्थिक अस्थिरता और तकनीकी बदलाव जैसे मुद्दों पर भारत-यूरोप के साझा नजरिए को रेखांकित करता है।

फ्री ट्रेड एग्रीमेंट की दिशा में अहम मोड़

उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने भारत-यूरोप फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) को लेकर भी बड़ा संकेत दिया। उन्होंने कहा कि यह साझेदारी केवल शुरुआत है और आने वाले समय में सहयोग का दायरा और व्यापक होगा।उन्होंने कहा, "भारत और यूरोप आज दुनिया को एक मजबूत संदेश दे रहे हैं। ऐसे समय में जब दुनिया में मतभेद और तनाव बढ़ रहे हैं, हम बातचीत, सहयोग और तालमेल का रास्ता चुन रहे हैं।"उनके मुताबिक यह सहयोग अस्थिर समय में स्थिरता और भरोसा बढ़ाएगा। इससे लोगों को सुरक्षा का एहसास होगा और कारोबार व निवेश को निश्चितता मिलेगी।

यूरोपियन काउंसिल प्रेसिडेंट कोस्टा का संदेश

यूरोपियन काउंसिल के प्रेसिडेंट एंटोनियो कोस्टा ने भी राष्ट्रपति भवन में हुए डिनर के दौरान भारत-यूरोप संबंधों की मजबूती पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "तेजी से बदलती दुनिया में हमारी रणनीतिक साझेदारी का बड़ा आर्थिक और भू-राजनीतिक महत्व है।"कोस्टा ने शिखर सम्मेलन के नतीजों पर गर्व जताते हुए कहा कि फ्री ट्रेड एग्रीमेंट, डिफेंस पार्टनरशिप और 2030 के लिए जॉइंट स्ट्रैटजिक एजेंडा के जरिए वैश्विक मुद्दों पर सहकारी नेतृत्व का उदाहरण पेश किया गया है।

उनके शब्दों में यह एक "सॉलिड डेवलपमेंट" है, जो भविष्य में भारत और यूरोप को और करीब लाएगा।

कूटनीति के साथ संस्कृति की झलक

राष्ट्रपति भवन का यह डिनर सिर्फ भाषणों और समझौतों तक सीमित नहीं था। इसमें भारतीय संस्कृति और स्वाद की भी खास झलक देखने को मिली। डिनर मेन्यू में इस बार हिमालयी व्यंजनों पर विशेष फोकस रखा गया।मेन्यू की शुरुआत जाखिया आलू और हरी टमाटर की चटनी से हुई। इसके साथ झांगोरा की खीर, मेआ लून और सफेद चॉकलेट का अनोखा मेल परोसा गया।सूप में सुंदरकला थिचोनी ने मेहमानों को पहाड़ी स्वाद से परिचित कराया।

हिमालयी स्वाद से सजी थाली

मेन कोर्स में खसखस और भुने हुए टमाटर की चटनी के साथ हिमाचली स्वर्ण चावल और सोलन मशरूम परोसे गए। इसके साथ राई के पत्ते, कश्मीरी अखरोट, भुने हुए टमाटर और अखुनी से बनी तीन तरह की चटनी रखी गई थी।डेजर्ट में हिमालयी रागी और कश्मीरी सेब का केक पेश किया गया। इसमें तिमरू और सी बकथॉर्न क्रीम, खजूर और कच्चे कोको के साथ कॉफी कस्टर्ड और हिमालयी शहद के साथ परोसा गया परिसिमन शामिल था।इन खास व्यंजनों को मशहूर शेफ प्रतीक साधु और कमलेश नेगी के सहयोग से तैयार किया गया था, जिसने भारतीय पहाड़ी खानपान को अंतरराष्ट्रीय मंच पर खास पहचान दी।

भारत-यूरोप साथ-साथ

राष्ट्रपति भवन में हुई यह शाम एक साफ संदेश छोड़ गई,भारत और यूरोप अब केवल साझेदार नहीं, बल्कि वैश्विक चुनौतियों के समाधान में सहयोगी हैं। चाहे बात व्यापार की हो, सुरक्षा की, जलवायु परिवर्तन की या तकनीक की,दोनों पक्ष मिलकर आगे बढ़ना चाहते हैं।जहां यूरोप भारत को वैश्विक राजनीति का अहम खिलाड़ी मान रहा है, वहीं भारत भी यूरोप के साथ दीर्घकालिक और भरोसेमंद साझेदारी को मजबूत करने के मूड में है।इस डिनर ने यह साफ कर दिया कि आने वाले वर्षों में भारत-यूरोप रिश्ते केवल कूटनीतिक मंचों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि वैश्विक स्थिरता और विकास के लिए एक मजबूत आधार बनेंगे।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सात साल बाद फिर चर्चा में मर्दानी 2

नेटफ्लिक्स पर पुरानी फिल्म का नया जलवा

@ मनीष पांडेय

ओटीटी पर पुरानी फिल्मों की वापसी

ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर हर हफ्ते नई वेब सीरीज और फिल्मों की भरमार रहती है। एक्शन, थ्रिलर, रोमांस, कॉमेडी से लेकर डॉक्यूमेंट्री तक, दर्शकों के लिए विकल्पों की कोई कमी नहीं है। इसके बावजूद कई बार ऐसा होता है कि नई रिलीज के बीच कोई पुरानी फिल्म अचानक लोगों की पसंद बन जाती है और ट्रेंड करने लगती है।हाल के दिनों में ऐसा ही नजारा देखने को मिला है। करीब सात साल पुरानी एक हिंदी फिल्म ने एक बार फिर दर्शकों का ध्यान खींच लिया है और नेटफ्लिक्स के टॉप-10 ट्रेंडिंग लिस्ट में अपनी जगह बना ली है। यह फिल्म है रानी मुखर्जी स्टारर मर्दानी 2।

नेटफ्लिक्स टॉप-10 में शामिल मर्दानी 2

नेटफ्लिक्स पर इस वक्त 'मर्दानी 2' भारत में नंबर-7 पर ट्रेंड कर रही है। खास बात यह है कि यह कोई नई रिलीज नहीं, बल्कि 2019 में सिनेमाघरों में आई फिल्म है। इसके बावजूद आज भी दर्शक इसे बड़े चाव से देख रहे हैं।ओटीटी पर फिल्म की यह वापसी बताती है कि मजबूत कहानी और दमदार अभिनय वाली फिल्में समय के साथ अपनी अहमियत नहीं खोतीं। सही मौका और सही प्लेटफॉर्म मिलने पर वे दोबारा चर्चा में आ जाती हैं।

क्राइम थ्रिलर का दमदार उदाहरण

'मर्दानी 2' एक सस्पेंस और क्राइम थ्रिलर फिल्म है। यह फिल्म महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों पर सीधा और कठोर सवाल उठाती है। फिल्म का टोन गंभीर है और इसकी कहानी दर्शक को शुरू से आखिर तक बांधे रखती है।करीब 1 घंटा 43 मिनट की इस फिल्म में गैरजरूरी गानों या हल्के-फुल्के सीन की जगह कहानी और किरदारों पर पूरा फोकस रखा गया है। यही वजह है कि यह फिल्म आज भी उतनी ही प्रभावशाली लगती है, जितनी रिलीज के वक्त थी।

क्या है मर्दानी 2 की कहानी

फिल्म की कहानी एक सनकी और खतरनाक सीरियल किलर के इर्द-गिर्द घूमती है। यह अपराधी एक के बाद एक लड़कियों का अपहरण करता है, उनके साथ दुष्कर्म करता है और फिर बेरहमी से उनकी हत्या कर देता है।पुलिस इस किलर को पकड़ने की हर संभव कोशिश करती है, लेकिन वह हर बार कानून को चकमा देकर फरार हो जाता है। इसी बीच मामला लेडी पुलिस ऑफिसर शिवानी शिवाजी रॉय के हाथ में आता है।रानी मुखर्जी द्वारा निभाया गया यह किरदार निडर, ईमानदार और अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित है। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे वह इस केस को सुलझाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक देती है और अपराधी को उसके अंजाम तक पहुंचाती है।

रानी मुखर्जी का दमदार अभिनय

मर्दानी 2 की सबसे बड़ी ताकत रानी मुखर्जी का अभिनय है। उन्होंने एक सख्त लेकिन संवेदनशील पुलिस अधिकारी की भूमिका को बेहद प्रभावी ढंग से निभाया है।उनका किरदार न तो जरूरत से ज्यादा आक्रामक दिखाया गया है और न ही कमजोर। वह कानून के दायरे में रहते हुए अपराधियों से सख्ती से निपटती हैं। यही संतुलन उनके अभिनय को खास बनाता है।रानी मुखर्जी की यही छवि 'मर्दानी' फ्रेंचाइजी की पहचान बन चुकी है। यही वजह है कि दर्शक इस किरदार से खुद को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं।

बॉक्स ऑफिस पर भी रही थी सफल

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक 'मर्दानी 2' का बजट करीब 27 करोड़ रुपये था। रिलीज के बाद फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 47 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की थी।वहीं, वर्ल्डवाइड कलेक्शन की बात करें तो यह आंकड़ा 67 करोड़ रुपये के पार पहुंच गया था।

इन आंकड़ों के आधार पर फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट माना गया।यह सफलता दिखाती है कि दर्शकों ने सिनेमाघरों में भी इस गंभीर विषय वाली फिल्म को खुलकर अपनाया था।

क्यों आज भी पसंद की जा रही है फिल्म

आज के समय में जब ओटीटी पर हल्की-फुल्की और फास्ट कंटेंट वाली फिल्में और सीरीज ज्यादा चलन में हैं, ऐसे में 'मर्दानी 2' जैसी गंभीर फिल्म का ट्रेंड करना अपने आप में खास है।इसकी वजह है फिल्म का मजबूत कंटेंट, सधी हुई कहानी और सामाजिक मुद्दों को सामने रखने का साहस। महिलाओं की सुरक्षा, कानून व्यवस्था और अपराध के खिलाफ लड़ाई जैसे विषय आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।शायद यही कारण है कि नई पीढ़ी के दर्शक भी इस फिल्म को देख रहे हैं और पसंद कर रहे हैं।

मर्दानी 3 की घोषणा से बढ़ा उत्साह

मर्दानी 2 के ट्रेंड करने के बीच फैंस के लिए एक और बड़ी खबर सामने आ चुकी है। 'मर्दानी 3' की रिलीज को लेकर आधिकारिक जानकारी मिल चुकी है।रानी मुखर्जी एक बार फिर शिवानी शिवाजी रॉय के किरदार में नजर आएंगी। मर्दानी फ्रेंचाइजी की तीसरी किस्त को 30 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा।थिएटर्स के बाद ओटीटी दर्शकों के लिए भी खुशखबरी है। जानकारी के मुताबिक, 'मर्दानी 3' को थिएटर रिलीज के बाद 27 मार्च से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम किया जाएगा।इससे उन दर्शकों को भी फिल्म देखने का मौका मिलेगा, जो सिनेमाघर नहीं जा पाते या घर पर ही फिल्में देखना पसंद करते हैं।

महिलाओं की सुरक्षा का मजबूत संदेश

मर्दानी फ्रेंचाइजी सिर्फ एक थ्रिलर सीरीज नहीं है। यह महिलाओं की सुरक्षा, उनके अधिकारों और समाज में बढ़ते अपराधों पर गंभीर सवाल भी उठाती है।फिल्म यह दिखाती है कि कानून के सही इस्तेमाल और मजबूत इरादों से अपराधियों को रोका जा सकता है। यही वजह है कि यह फ्रेंचाइजी सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सोचने पर भी मजबूर करती है।सात साल बाद भी मर्दानी 2 का ट्रेंड करना इस बात का सबूत है कि अच्छी फिल्में वक्त की कसौटी पर खरी उतरती हैं। मजबूत कहानी, असरदार निर्देशन और सशक्त अभिनय इसे आज भी दर्शकों के बीच प्रासंगिक बनाए हुए हैं।नेटफ्लिक्स पर इसकी लोकप्रियता यह भी दिखाती है कि दर्शक सिर्फ नई फिल्मों के पीछे नहीं भागते, बल्कि कंटेंट अच्छा हो तो पुरानी फिल्में भी उतनी ही पसंद की जाती हैं।अब जब मर्दानी 3 रिलीज के लिए तैयार है, तो एक बार फिर शिवानी शिवाजी रॉय की वापसी को लेकर दर्शकों की उम्मीदें काफी बढ़ चुकी हैं।

एआई से डर नहीं, मौका पहचानिए

IIT मद्रास ला रहा है 6 मुफ्त AI कोर्स, वो भी हिंदी में

@ रिंकू विश्वकर्मा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को लेकर इन दिनों सबसे ज्यादा चर्चा नौकरियों को लेकर है। कहीं यह डर है कि मशीनें इंसानों की जगह ले लेंगी, तो कहीं यह उम्मीद कि जो लोग समय रहते एआई के साथ कदम मिलाएंगे, उनके लिए नए रास्ते खुलेंगे। सच यही है कि एआई कुछ पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित जरूर कर रहा है, लेकिन उसी तेजी से यह नए करियर ऑप्शन भी पैदा कर रहा है।आज कंपनियों को ऐसे प्रोफेशनल्स चाहिए जो एआई को समझते हों, उसका इस्तेमाल कर सकें और अपने काम को ज्यादा प्रभावी बना सकें। यही वजह है कि एआई स्किल्स वाले लोगों की डिमांड और सैलरी दोनों तेजी से बढ़ रही हैं।

सबसे बड़ा सवाल: एआई कहां से सीखें?

ज्यादातर लोगों के मन में एक ही सवाल घूमता रहता है,एआई आखिर कहां से सीखें और कौन सा कोर्स सबसे बेहतर होगा? खासकर हिंदी माध्यम से पढ़ने वालों के लिए विकल्प और भी सीमित नजर आते हैं। ऐसे में आईआईटी मद्रास की एक पहल लाखों लोगों के लिए राहत बनकर आई है।देश के प्रतिष्ठित संस्थान आईआईटी मद्रास ने अब 6 नए एआई कोर्स लॉन्च किए हैं और सबसे खास बात यह है कि ये सभी कोर्स पूरी तरह मुफ्त हैं और हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं।

हर किसी के लिए एआई

आईआईटी मद्रास के डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म 'स्वयं प्लस' (SWAYAM Plus) ने 'AI for All' नाम से इस पहल की शुरुआत की है। इसका सीधा सा उद्देश्य है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पढ़ाई को हर भारतीय तक पहुंचाना। इन कोर्सेस को खासतौर पर इस तरह डिजाइन किया गया है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी शैक्षणिक या प्रोफेशनल बैकग्राउंड से हो, आसानी से एआई सीख सके। अच्छी बात यह है कि इन कोर्सेस के लिए पहले से कोडिंग या एआई की जानकारी होना जरूरी नहीं है।

हिंदी में एआई: एक बड़ी पहल

अक्सर देखा जाता है कि तकनीकी कोर्स अंग्रेजी में होते हैं, जिससे हिंदी माध्यम के छात्रों को दिक्कत आती है। लेकिन आईआईटी मद्रास की यह पहल इस सोच को बदलने की कोशिश है।इन सभी 6 कोर्सेस को हिंदी में तैयार किया गया है, ताकि देश के छोटे शहरों, कस्बों और गांवों के युवा भी एआई जैसी आधुनिक तकनीक से जुड़ सकें।

रजिस्ट्रेशन कैसे करें?

आईआईटी मद्रास के इन मुफ्त एआई कोर्सेस के लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया काफी आसान है।इसके लिए आपको swayam-plus.swayam2.ac.in वेबसाइट पर जाना होगा।वहां पहले अपना रजिस्ट्रेशन करना होगा।रजिस्ट्रेशन के बाद आप अपनी रुचि और जरूरत के अनुसार कोर्स चुन सकते हैं। इन कोर्सेस की अवधि 25 से 45 घंटे के बीच है, यानी इन्हें आराम से अपनी पढ़ाई या नौकरी के साथ भी किया जा सकता है। इन कोर्सेस के लिए 26 जनवरी तक रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है।

क्या मिलेगा सर्टिफिकेट?

बहुत से लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या इन कोर्सेस के बाद सर्टिफिकेट भी मिलेगा। इसका जवाब है,हां।हालांकि कोर्स करना पूरी तरह मुफ्त है, लेकिन अगर कोई सर्टिफिकेट चाहता है, तो उसे एक ऑनलाइन प्रॉक्टर्ड परीक्षा देनी होगी। इसके लिए एक तय फीस देनी होगी। परीक्षा पास करने पर आईआईटी मद्रास की ओर से सर्टिफिकेट दिया जाएगा, जो आगे नौकरी या करियर में काफी काम आ सकता है।

कौन-कौन से एआई कोर्स उपलब्ध हैं?

आईआईटी मद्रास ने अलग-अलग वर्गों और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ये 6 एआई कोर्स तैयार किए हैं।

टीचर्स के लिए एआई कोर्स

यह कोर्स खासतौर पर उन लोगों के लिए है जो शिक्षक बनना चाहते हैं या पहले से K-12 स्तर पर पढ़ा रहे हैं। इसमें एआई आधारित पढ़ाने के तरीके, स्टूडेंट असेसमेंट और स्मार्ट टीचिंग मैथड्स सिखाए जाएंगे। बदलते एजुकेशन सिस्टम में यह कोर्स शिक्षकों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकता है।

AI in Physics

यह कोर्स अंडरग्रेजुएट (UG) और पोस्टग्रेजुएट (PG) छात्रों के लिए तैयार किया गया है। इसमें बताया जाएगा कि फिजिक्स की जटिल समस्याओं को हल करने में एआई का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है। रिसर्च और उच्च शिक्षा में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए यह कोर्स खास माना जा रहा है।

AI in Chemistry

केमिस्ट्री पढ़ने वाले यूजी और पीजी छात्रों के लिए यह कोर्स बेहद फायदेमंद है। इसमें रासायनिक प्रतिक्रियाओं की मॉडलिंग, डेटा एनालिसिस और एआई आधारित सॉल्यूशंस पर फोकस किया गया है। यह कोर्स आगे रिसर्च और इंडस्ट्री दोनों में मददगार हो सकता है।

AI in Accounting

कॉमर्स और मैनेजमेंट के छात्रों के लिए बनाया गया यह कोर्स अकाउंटिंग की दुनिया को नए नजरिए से देखने का मौका देता है। इसमें बताया जाएगा कि एआई की मदद से अकाउंटिंग प्रोसेस को कैसे आसान, तेज और ज्यादा सटीक बनाया जा सकता है।

Cricket Analytics with AI

क्रिकेट प्रेमियों के लिए यह कोर्स किसी तोहफे से कम नहीं है। इसमें रियल टाइम क्रिकेट डेटा, आंकड़ों का विश्लेषण और विजुअलाइजेशन तकनीक सिखाई जाएगी। स्पोर्ट्स एनालिटिक्स में करियर बनाने वालों के लिए यह कोर्स नए दरवाजे खोल सकता है।

AI/ML using Python

यह कोर्स उन लोगों के लिए है जो एआई और मशीन लर्निंग की बुनियादी तकनीक सीखना चाहते हैं। इसमें पायथन प्रोग्रामिंग, सांख्यिकी और डेटा विजुअलाइजेशन शामिल हैं। टेक्निकल बैकग्राउंड वाले छात्रों के लिए यह कोर्स मजबूत आधार तैयार करता है।

किसके लिए फायदेमंद हैं ये कोर्स?

ये कोर्स सिर्फ इंजीनियरिंग छात्रों के लिए नहीं हैं। टीचर्स, कॉमर्स स्टूडेंट्स, साइंस स्टूडेंट्स, स्पोर्ट्स एनालिटिक्स में रुचि रखने वाले युवा और यहां तक कि नौकरीपेशा लोग भी इनसे फायदा उठा सकते हैं।जो लोग अपने करियर में बदलाव चाहते हैं या नई स्किल जोड़ना चाहते हैं, उनके लिए यह एक सुनहरा मौका है।आज का दौर एआई से डरने का नहीं, बल्कि उसे समझने और अपनाने का है। आईआईटी मद्रास की यह पहल इस बात का संकेत है कि भविष्य की तकनीक अब सिर्फ बड़े शहरों या चुनिंदा लोगों तक सीमित नहीं रहेगी।अगर सही समय पर सही स्किल सीख ली जाए, तो एआई न सिर्फ नौकरी बचा सकता है, बल्कि करियर को नई ऊंचाई भी दे सकता है। मुफ्त, हिंदी और आईआईटी जैसे संस्थान का नाम,तीनों मिलकर इसे एक बेहतरीन अवसर बनाते हैं।जो लोग आगे बढ़ना चाहते हैं, उनके लिए यह मौका हाथ से जाने देने वाला नहीं है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

मैं तुम लोगों से दूर हूँ

मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ
तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न है

कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है।
मेरी असंग स्थिति में चलता-फिरता साथ है,

अकेले में साहचर्य का हाथ है,
उनका जो तुम्हारे द्वारा गर्हित हैं

किन्तु वे मेरी व्याकुल आत्मा में बिंबित हैं, पुरस्कृत हैं
इसीलिए, तुम्हारा मुझ पर सतत आघात है!!

सबके सामने और अकेले में।
(मेरे रक्त-भरे महाकाव्यों के पन्ने उड़ते हैं

तुम्हारे-हमारे इस सारे झमेले में)
असफलता का धूल-कचरा ओढ़े हूँ

इसलिए कि वह चक्करदार ज़ीनों पर मिलती है
छल-छद्म धन की

किन्तु मैं सीधी-सादी पटरी-पटरी दौड़ा हूँ
जीवन की।

फिर भी मैं अपनी सार्थकता से खिन्न हूँ
विष से अप्रसन्न हूँ

इसलिए कि जो है उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया साफ़ करने के लिए मेहतर चाहिए

वह मेहतर मैं हो नहीं पाता
पर, रोज़ कोई भीतर चिल्लाता है

कि कोई काम बुरा नहीं
बशर्ते कि आदमी खरा हो

फिर भी मैं उस ओर अपने को ढो नहीं पाता।
रेफ्रीजरेटरों, विटैमिनों, रेडियोग्रेमों के बाहर की

गतियों की दुनिया में
मेरी वह भूखी बच्ची मुनिया है शून्यों में

पेटों की आँतों में न्यूनों की पीड़ा है
छाती के कोषों में रिक्तों की व्रीड़ा है

शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही सत्य है
शेष सब अवास्तव अयथार्थ मिथ्या है भ्रम है

सत्य केवल एक जो कि
दुःखों का क्रम है।

मैं कनफटा हूँ हेठा हूँ
शेव्रलेट-डॉज के नीचे मैं लेटा हूँ

तेलिया लिबास में पुरज़े सुधारता हूँ
तुम्हारी आज्ञाएँ ढोता हूँ।

विचार आते हैं

विचार आते हैं—
लिखते समय नहीं,

बोझ ढोते वक्त पीठ पर
सिर पर उठाते समय भार

परिश्रम करत समय
चाँद उगता है व

पानी में झलमलाने लगता है
हृदय के पानी में।

विचार आते हैं
लिखते समय नहीं,

...पत्थर ढोते वक्त
पीठ पर उठाते वक्त बोझ

साँप मारते समय पिछवाड़े
बच्चों की नेकर फचीटते वक्त!!

पत्थर पहाड़ बन जाते हैं
नक्शे बनते हैं भौगोलिक

पीठ कच्छप बन जाते हैं
समय पृथ्वी बन जाता है...

गजानन माधव मुक्तिबोध

आधुनिक हिंदी कविता के अग्रणी कवियों में से एक। अपनी कहानियों और डायरी के लिए भी प्रसिद्ध।

अमेरिका की यूएन से बढ़ती दूरी क्या दुनिया का विकास रुक जाएगा?

अभी कुछ दिन पहले, 7 जनवरी 2026 को, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बड़ा फैसला लिया। उन्होंने एक आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसमें अमेरिका को 66 अंतरराष्ट्रीय संगठनों से अलग करने की बात कही गई है। इनमें से 31 संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के हिस्से हैं। व्हाइट हाउस के अनुसार, ये संगठन अमेरिका के हितों के खिलाफ काम कर रहे हैं। वे अमेरिकी पैसे का गलत इस्तेमाल करते हैं, देश की स्वतंत्रता को कमजोर करते हैं और ऐसे कार्यक्रम चलाते हैं जो अमेरिका की नीतियों से मेल नहीं खाते। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन के कड़े नियम या वैश्विक शासन की बातें। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि इससे अमेरिकी करदाताओं के पैसे बचेंगे, जो अब घरेलू जरूरतों जैसे सड़कें, सेना और सीमा सुरक्षा पर खर्च होंगे। यूएन के प्रवक्ता स्टेफान डुजारिक ने इस पर अफसोस जताया है। उन्होंने कहा कि यूएन अपने काम को जारी रखेगा, लेकिन अमेरिका की अनुपस्थिति से कई क्षेत्र प्रभावित होंगे। यह फैसला 2025 में शुरू हुई दूरी की कड़ी है, जब ट्रंप ने कुछ संगठनों से फंडिंग रोकने का आदेश दिया था। विशेषज्ञों का मानना है कि यह अमेरिका की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति का हिस्सा है, जहां देश खुद को वैश्विक जिम्मेदारियों से अलग कर रहा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या इससे दुनिया के विकास पर असर पड़ेगा? कई लोग कहते हैं कि अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और उसकी भागीदारी के बिना यूएन के कार्यक्रम कमजोर हो सकते हैं। मिसाल के तौर पर, जलवायु, व्यापार और विकास से जुड़े काम। दूसरी तरफ, कुछ अमेरिकी नेता इसे सही कदम मानते हैं, क्योंकि वे इन संगठनों को बेकार या पक्षपाती बताते हैं। कुल मिलाकर, यह घटना वैश्विक सहयोग पर सवाल उठाती है। क्या अमेरिका अकेला रहकर मजबूत होगा, या दुनिया को इससे नुकसान होगा? यह देखना बाकी है।

पहले की कहानी: अमेरिका और यूएन का पुराना रिश्ता

अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र का रिश्ता हमेशा से उतार-चढ़ाव वाला रहा है। 1945 में यूएन की स्थापना में अमेरिका ने बड़ी भूमिका निभाई थी, लेकिन समय के साथ दूरी बढ़ती गई। ट्रंप के पहले कार्यकाल में, 2018 में अमेरिका ने यूनेस्को से निकलने का फैसला किया, क्योंकि उसे लगा कि यह संगठन इजरायल के खिलाफ पक्षपाती है। उसी साल, यूएन ह्यूमन राइट्स काउंसिल से भी बाहर हो गया, वजह वही पक्षपात। 2020 में, कोरोना महामारी के बीच ट्रंप ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से निकलने की घोषणा की, कहते हुए कि यह चीन के प्रभाव में है और अमेरिकी पैसे का सही इस्तेमाल नहीं करता। पेरिस जलवायु समझौते से भी अमेरिका बाहर हुआ, क्योंकि ट्रंप को लगा कि यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाता है। हालांकि, 2021 में जो बाइडेन के आने पर अमेरिका ने कई जगह वापसी की, जैसे पेरिस समझौता और डब्ल्यूएचओ। लेकिन अब 2026 में ट्रंप

हाल की घटना: ट्रंप का बड़ा कदम

की वापसी के साथ फिर दूरी बढ़ रही है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह पैटर्न अमेरिकी राजनीति से जुड़ा है। रिपब्लिकन नेता अक्सर यूएन को बेकार बताते हैं, जबकि डेमोक्रेट्स सहयोग पर जोर देते हैं। उदाहरण के लिए, 2025 में ट्रंप ने कुछ फंडिंग रोकी, और अब 66 संगठनों से निकलना। इससे साफ है कि अमेरिका चुन-चुनकर उन प्रोग्राम्स से दूर हो रहा है जो उसके हितों से मेल नहीं खाते। लेकिन क्या यह सही है? एक तरफ, अमेरिका कहता है कि इससे उसके पैसे बचते हैं और स्वतंत्रता बनी रहती है। दूसरी तरफ, दुनिया के कई देश कहते हैं कि अमेरिका की अनुपस्थिति से वैश्विक समस्याएं सुलझाना मुश्किल हो जाएगा। जैसे, जलवायु परिवर्तन या गरीबी। इतिहास बताता है कि ऐसी दूरी से पहले भी दुनिया प्रभावित हुई है, लेकिन यूएन चलता रहा। सवाल यह है कि इस बार का बड़ा कदम कितना असर डालेगा।

प्रभावित क्षेत्र: यूएन के कौन-कौन से प्रोग्राम्स पर खतरा

इस निकासी से 31 यूएन एजेंसियां प्रभावित होंगी, जो दुनिया के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में काम करती हैं। मिसाल के तौर पर, यूएनएफसीसीसी जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक समझौतों का ध्यान रखती है, जैसे पेरिस समझौता। अमेरिका के बिना इसके प्रयास कमजोर हो सकते हैं। इसी तरह, यूएन रेड+ जंगलों की रक्षा करता है, यूएन एनर्जी साफ ऊर्जा पर काम करता है, और यूएन वाटर पानी के प्रबंधन में मदद करता है। व्यापार में, यूएनसीटीएडी विकासशील देशों को वैश्विक बाजार में शामिल होने में सहायता देती है, जबकि आईटीसी छोटे व्यापारियों को ट्रेनिंग देती है। विकास के लिए, यूएन हैबिटेट शहरों के सतत विकास पर फोकस करती है, और क्षेत्रीय आयोग जैसे ईसीए अफ्रीका में आर्थिक विकास की सलाह देते हैं। महिलाओं के लिए यूएन विमेन लिंग समानता पर काम करती है, यूएनएफपीए मातृत्व स्वास्थ्य और जनसंख्या डेटा पर। बच्चों की सुरक्षा के लिए कई ऑफिस हैं, जैसे बच्चों पर हिंसा या युद्ध में बच्चों पर। शांति निर्माण के लिए पीसबिल्डिंग कमीशन और फंड देशों को संघर्ष से उबरने में मदद करते हैं। अंतरराष्ट्रीय कानून के लिए आईएलसी और आईआरएमसीटी युद्ध अपराधों पर काम करते हैं। कुल मिलाकर, ये एजेंसियां दुनिया को स्थिर और सुरक्षित बनाने में भूमिका निभाती हैं। अमेरिका की निकासी से फंडिंग कम हो सकती है, क्योंकि अमेरिका सबसे बड़ा दानकर्ता है। लेकिन यूएन कहता है कि वह काम जारी रखेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे अमेरिका की आवाज कम हो जाएगी, और चीन जैसे देश ज्यादा प्रभाव डाल सकेंगे। क्या यह दुनिया के लिए अच्छा है? एक तरफ, कुछ कहते हैं कि यूएन बिना अमेरिका के भी चल सकता है। दूसरी तरफ, कई क्षेत्रों में प्रगति रुक सकती है, जैसे जलवायु या स्वास्थ्य।

दुनिया पर असर: फायदे और नुकसान की बहस

इस फैसले के दुनिया पर कई असर पड़ सकते हैं, और विशेषज्ञ दोनों पक्ष देख रहे हैं। अच्छी बात यह है कि अमेरिका अपने पैसे बचाकर घरेलू मुद्दों पर ध्यान दे सकता है, जैसे बुनियादी ढांचा और सुरक्षा। ट्रंप प्रशासन कहता है कि ये संगठन बेकार हैं, पैसा बर्बाद करते हैं और अमेरिका की स्वतंत्रता पर असर डालते हैं। इससे अमेरिकी कंपनियां विदेशी हस्तक्षेप से बच सकती हैं। लेकिन नुकसान ज्यादा लगते हैं। जलवायु में, यूएनएफसीसीसी जैसे प्रोग्राम कमजोर होंगे, जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ सकती है, और अमेरिका खुद प्रभावित होगा, जैसे बाढ़ या सूखा। व्यापार में, विकासशील देशों की मदद कम होने से वैश्विक बाजार अस्थिर हो सकते हैं, जो अमेरिकी निर्यात को नुकसान पहुंचाएगा। विकास के क्षेत्र में, यूएन हैबिटेट या यूएनएफपीए के काम रुकने से गरीबी और स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ सकती हैं, जिससे प्रवास और संघर्ष बढ़ेगा। शांति और सुरक्षा में, बच्चों या महिलाओं पर हिंसा रोकने के प्रयास कमजोर होंगे। यूएन का कहना है कि अमेरिका की कानूनी जिम्मेदारी है फंडिंग देने की, लेकिन ट्रंप इसे नजरअंदाज कर रहे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि इससे अमेरिका की वैश्विक छवि खराब होगी, और अन्य देश जैसे यूरोपीय संघ या चीन आगे आएंगे। क्या दुनिया पीछे धकेल दी जाएगी? हां, क्योंकि अमेरिका की भागीदारी से कई समस्याएं सुलझी हैं। लेकिन कुछ मानते हैं कि यह यूएन को मजबूत बनाने का मौका है, जहां बाकी देश ज्यादा जिम्मेदारी लें। कुल मिलाकर, यह फैसला विचार करने लायक है कि वैश्विक सहयोग कितना जरूरी है।

आगे की राह: क्या बदलाव आएगा

भविष्य में इस दूरी से क्या होगा, यह समय बताएगा, लेकिन कुछ संभावनाएं साफ हैं। अगर अमेरिका इन 31 यूएन एजेंसियों से पूरी तरह अलग रहता है, तो फंडिंग का बड़ा हिस्सा कम हो जाएगा, क्योंकि अमेरिका 22 प्रतिशत यूएन बजट देता है। इससे कार्यक्रम छोटे हो सकते हैं या रुक सकते हैं। लेकिन यूएन कहता है कि वह सदस्य देशों के आदेशों से काम करेगा। अन्य देश जैसे चीन, जापान या जर्मनी ज्यादा योगदान दे सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव बढ़ेगा। अमेरिका के लिए, यह 'अमेरिका फर्स्ट' को मजबूत कर सकता है, लेकिन लंबे समय में नुकसान हो सकता है, जैसे जलवायु प्रभाव या व्यापारिक झगड़े। विशेषज्ञ कहते हैं कि पहले की निकासी से सीखते हुए, दुनिया नए तरीके खोज सकती है। मिसाल के तौर पर, जलवायु पर अलग समझौते या निजी कंपनियों की भूमिका। लेकिन सवाल यह है कि क्या अमेरिका वापस आएगा? अगर अगले चुनाव में बदलाव आया, तो शायद। अभी, सीनेटर जैसे पीटर वेल्च ने इसकी आलोचना की है, कहते हुए कि इससे अमेरिका अलग-थलग पड़ेगा। दूसरी तरफ, ट्रंप के समर्थक इसे सही बताते हैं। कुल मिलाकर, यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि दुनिया की समस्याएं अकेले नहीं सुलझ सकतीं। सहयोग जरूरी है, लेकिन अगर बड़ा देश दूर होता है, तो क्या छोटे देश मिलकर काम चला पाएंगे? शायद हां, लेकिन मुश्किल होगी। यह समय वैश्विक नेतृत्व पर नए सवाल उठाता है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

एक फरवरी का बजट और इतिहास की दहलीज पर निर्मला सीतारमण

@ आनंद मीणा

एक फरवरी 2026 को जब केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद में केंद्रीय बजट पेश करेंगी, तो यह सिर्फ एक सालाना आर्थिक दस्तावेज नहीं होगा, बल्कि इतिहास के पन्नों में दर्ज होने वाला एक अहम क्षण भी होगा। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, भू-राजनीतिक तनाव और घरेलू स्तर पर विकास को नई रफ्तार देने की जरूरत के बीच आने वाले इस बजट पर पूरे देश की निगाहें टिकी हैं। उद्योग जगत से लेकर आम नागरिक तक, सभी को उम्मीद है कि यह बजट अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाले सुधारवादी कदमों के साथ सामने आएगा।सरकार के सामने चुनौती साफ है,महंगाई पर नियंत्रण, रोजगार के नए अवसर, निवेश को बढ़ावा और विकास की रफ्तार को बनाए रखना। ऐसे में यह बजट कई मायनों में निर्णायक माना जा रहा है।

बजट की तैयारियां अंतिम चरण में

केंद्रीय बजट 2026-27 की तैयारियां अब अपने अंतिम दौर में पहुंच चुकी हैं। मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली स्थित नॉर्थ ब्लॉक के बजट प्रेस में पारंपरिक हलवा सेरेमनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण और वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी मौजूद रहे।हलवा सेरेमनी को बजट प्रक्रिया का बेहद अहम हिस्सा माना जाता है। यह परंपरा केवल एक रस्म नहीं, बल्कि इस बात का संकेत होती है कि बजट तैयार करने का काम लगभग पूरा हो चुका है और अब अंतिम चरण शुरू हो गया है।

हलवा सेरेमनी का अर्थ

हलवा सेरेमनी के साथ ही बजट तैयार करने में शामिल अधिकारी और कर्मचारी 'लॉक-इन' प्रक्रिया में चले जाते हैं। इसका मतलब है कि बजट पेश होने तक ये सभी अधिकारी बाहरी दुनिया से पूरी तरह कट जाते हैं। न फोन, न मीडिया संपर्क और न ही किसी तरह की बाहरी जानकारी का आदान-प्रदान।इस परंपरा का मकसद बजट की गोपनीयता बनाए रखना है, ताकि बजट से जुड़ी कोई भी संवेदनशील जानकारी समय से पहले बाहर न जाए। आज के डिजिटल दौर में भी यह व्यवस्था उसी सख्ती से लागू की जाती है, जैसी दशकों पहले की जाती थी।

एक फरवरी को पेश होगा बजट

केंद्रीय बजट 2026-27 को एक फरवरी 2026 को संसद में पेश किया जाएगा। इस दिन देश की आर्थिक दिशा तय करने वाले फैसलों की झलक मिलेगी। सरकार की प्राथमिकताएं, कर नीति, खर्च की दिशा और विकास योजनाओं का खाका इसी दस्तावेज के जरिए सामने आएगा।इस बार का बजट इसलिए भी खास माना जा रहा है क्योंकि यह ऐसे समय में आ रहा है, जब वैश्विक स्तर पर आर्थिक हालात पूरी तरह स्थिर नहीं हैं। कई देशों में मंदी की आशंका, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उतार-चढ़ाव और वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता का माहौल है।

निर्मला सीतारमण रचेंगी नया इतिहास

इस बजट के साथ ही निर्मला सीतारमण एक नया इतिहास रचने जा रही हैं। अब तक वह फरवरी 2024 के अंतरिम बजट सहित कुल आठ लगातार बजट पेश कर चुकी हैं। एक फरवरी को जैसे ही वह बजट भाषण पढ़ना शुरू करेंगी, वैसे ही उनका नाम भारतीय वित्तीय इतिहास में और मजबूत हो जाएगा।इस साल का बजट पेश करने के साथ ही वह देश के पहले ऐसे वित्त मंत्रियों में शामिल हो जाएंगी, जिन्होंने लगातार नौ बजट पेश किए हों। यह रिकॉर्ड अपने आप में खास है, क्योंकि इससे पहले किसी भी वित्त मंत्री ने लगातार इतने बजट पेश नहीं किए हैं।

मोरारजी देसाई के रिकॉर्ड के करीब

निर्मला सीतारमण का यह सफर उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री मोरारजी देसाई के रिकॉर्ड के बेहद करीब ले आता है। मोरारजी देसाई ने अलग-अलग समय अवधियों में कुल 10 बजट पेश किए थे।उन्होंने 1959 से 1964 के बीच वित्त मंत्री रहते हुए छह बजट पेश किए थे। इसके बाद 1967 से 1969 के बीच चार और बजट उनके नाम रहे। हालांकि देसाई ने ये बजट अलग-अलग कार्यकालों में पेश किए थे, जबकि निर्मला सीतारमण लगातार बजट पेश करने का रिकॉर्ड अपने नाम कर चुकी हैं।

पूर्व वित्त मंत्रियों का रिकॉर्ड

अगर पूर्व वित्त मंत्रियों की बात करें, तो पी. चिदंबरम ने अलग-अलग प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में कुल नौ बजट पेश किए थे। वहीं, प्रणब मुखर्जी के नाम आठ बजट दर्ज हैं। लेकिन इन दोनों के मामले में बजट लगातार नहीं थे।लगातार सबसे अधिक बजट पेश करने का रिकॉर्ड अब पूरी तरह निर्मला सीतारमण के नाम हो चुका है। यह उपलब्धि न सिर्फ राजनीतिक रूप से, बल्कि प्रशासनिक स्थिरता के लिहाज से भी अहम मानी जा रही है।

मोदी सरकार में भरोसे की मुहर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2019 में दूसरी बार सत्ता में आने के बाद निर्मला सीतारमण को भारत की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री बनाया था। यह फैसला अपने आप में ऐतिहासिक था।इसके बाद 2024 में जब मोदी सरकार तीसरी बार सत्ता में लौटी, तो वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी एक बार फिर निर्मला सीतारमण को ही सौंपी गई। यह प्रधानमंत्री का उन पर भरोसा दिखाता है और साथ ही यह भी संकेत देता है कि सरकार आर्थिक नीति में निरंतरता बनाए रखना चाहती है।

महिला वित्त मंत्री के रूप में लंबा कार्यकाल

निर्मला सीतारमण न केवल पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री हैं, बल्कि वह सबसे लंबे समय तक इस पद पर रहने वाली महिला मंत्री भी बन चुकी हैं। उनके कार्यकाल में जीएसटी व्यवस्था को मजबूती मिली, कॉरपोरेट टैक्स में कटौती हुई और बुनियादी ढांचे पर सरकारी खर्च को बढ़ाया गया।उनके बजट आमतौर पर लंबी अवधि की सोच के साथ पेश किए गए हैं, जिनका फोकस विकास, निवेश और सुधारों पर रहा है।

इस बजट से क्या उम्मीदें

आने वाले बजट से आम लोगों और उद्योग जगत को कई उम्मीदें हैं। मध्यम वर्ग को कर राहत की आस है, वहीं उद्योग जगत निवेश बढ़ाने वाले कदमों की उम्मीद कर रहा है। रोजगार सृजन, स्टार्टअप्स को समर्थन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने जैसे मुद्दे भी इस बजट के केंद्र में रहने की संभावना है।सरकार के लिए यह संतुलन साधना जरूरी होगा कि वह राजकोषीय अनुशासन बनाए रखते हुए विकास को भी गति दे।

वैश्विक चुनौतियों के बीच भारतीय राह

आज जब दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्थाएं दबाव में हैं, भारत से उम्मीद की जा रही है कि वह स्थिरता का उदाहरण पेश करे। ऐसे में यह बजट न केवल घरेलू अर्थव्यवस्था के लिए, बल्कि वैश्विक निवेशकों के लिए भी एक संदेश होगा।नीतियों में स्पष्टता, सुधारों की निरंतरता और विकास के प्रति प्रतिबद्धता—इन तीनों का संतुलन इस बजट को खास बना सकता है।एक फरवरी 2026 को पेश होने वाला यह बजट सिर्फ आंकड़ों और घोषणाओं का दस्तावेज नहीं होगा। यह सरकार की मंशा, आर्थिक सोच और आने वाले वर्षों की दिशा को तय करने वाला रोडमैप होगा।और इसी के साथ, निर्मला सीतारमण का नाम भारतीय संसदीय और आर्थिक इतिहास में एक बार फिर मजबूती से दर्ज हो जाएगा। यह बजट उनके लंबे और लगातार कार्यकाल की एक और अहम कड़ी साबित होने जा रहा है।

अमेरिका की तरफ से भारत को राहत रूस से तेल खरीद में कमी की सच्चाई क्या है?

अमेरिकी वित्त मंत्री का बयान और टैरिफ की कहानी

अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने हाल ही में कहा है कि भारत ने रूस से तेल खरीदना काफी कम कर दिया है, और ये अमेरिका के लिए एक बड़ी जीत है। उन्होंने दावा किया कि राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत पर रूस से तेल खरीदने के लिए 25% अतिरिक्त टैरिफ लगाया था, जिसके बाद भारत ने अपनी खरीद घटा दी। ये बात उन्होंने विश्व आर्थिक फोरम में कही, जहां उन्होंने ये भी जिक्र किया कि अगर भारत आगे भी ऐसा करता रहा तो ये टैरिफ हटाया जा सकता है। अमेरिका का मानना है कि रूस पर लगे प्रतिबंधों की वजह से उसकी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाना जरूरी है, और भारत जैसे देशों को रूस से कम व्यापार करने के लिए दबाव डाला जा रहा है। लेकिन क्या ये सिर्फ टैरिफ की वजह से हुआ है? कई विशेषज्ञ कहते हैं कि इसमें कई और वजहें भी हैं, जैसे कि अमेरिका और यूरोपीय संघ के नए प्रतिबंधों से रूस से तेल लाना मुश्किल हो गया है। भुगतान की समस्या भी एक बड़ा मुद्दा है, क्योंकि रूस अब रुपए में भुगतान नहीं चाहता और अन्य मुद्राओं की मांग कर रहा है। साथ ही, रूसी तेल की कीमतें बढ़ गई हैं, जिससे भारत को मध्य पूर्व के देशों से तेल खरीदना ज्यादा फायदेमंद लग रहा है। अमेरिका की तरफ से 500% टैरिफ का खतरा भी लटक रहा है, जो भारत को और सतर्क बना रहा है। ये स्थिति भारत-अमेरिका संबंधों को मजबूत कर सकती है, लेकिन भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को भी ध्यान में रख रहा है। कुल मिलाकर, ये बयान अमेरिका की विदेश नीति का हिस्सा लगता है, जहां वो अपने सहयोगियों को रूस से दूर रखना चाहता है। लेकिन भारत ने हमेशा अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर जोर दिया है, और वो किसी एक देश पर निर्भर नहीं रहना चाहता। क्या ये कमी स्थायी है या अस्थायी, ये देखना बाकी है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर टैरिफ हट गया तो दोनों देशों के बीच व्यापार और बढ़ सकता है, लेकिन रूस के साथ संबंध भी बनाए रखने होंगे। ये मामला वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन का उदाहरण है, जहां हर देश अपने हितों को प्राथमिकता देता है।

भारत की रूसी तेल खरीद में आई कमी: आंकड़ों की हकीकत

हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत ने वाकई रूस से तेल खरीद कम की है। दिसंबर 2025 में भारत की रूसी तेल आयात 22% गिरकर 1.38 मिलियन बैरल प्रति दिन पर पहुंच गई, जो दो सालों में सबसे कम है। जनवरी 2026 में भी ये औसत 1.2 मिलियन बैरल प्रति दिन रहने की उम्मीद है। पहले भारत रूस से सबसे ज्यादा तेल खरीदने वाला देश था, क्योंकि यूक्रेन युद्ध के बाद रूसी तेल सस्ता मिल रहा था। लेकिन अब ओपेक देशों का हिस्सा बढ़कर 11 महीनों के उच्च स्तर पर पहुंच गया है। व्यापार मंत्रालय के डेटा से पता चलता है कि नवंबर 2025 में रूसी तेल आयात 7.7 मिलियन टन था, लेकिन उसके बाद तेज गिरावट आई। क्या ये कमी अमेरिकी टैरिफ की वजह से है? कुछ हद तक हां, क्योंकि 25% टैरिफ ने भारतीय रिफाइनरियों पर दबाव डाला। लेकिन मुख्य वजहें संकट हैं जैसे कि अमेरिका और यूरोप के सख्त प्रतिबंध, जो रूसी जहाजों और बीमा पर असर डाल रहे हैं। साथ ही, रूसी तेल की कीमतें अब छूट के साथ नहीं मिल रही हैं, जो पहले 30% तक सस्ता था। भारतीय कंपनियां अब सऊदी अरब, इराक और संयुक्त अरब अमीरात से ज्यादा तेल ले रही हैं, जहां डील बेहतर हैं। ये बदलाव भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अच्छा है, क्योंकि एक देश पर ज्यादा निर्भरता जोखिम भरी होती है। लेकिन रूस अभी भी भारत का बड़ा साझेदार है, और कुल आयात में उसका हिस्सा 30% से ऊपर है। विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर प्रतिबंध और सख्त हुए तो और कमी आ सकती है, लेकिन भारत अपनी जरूरतों के हिसाब से फैसले लेगा। ये स्थिति विचार करने लायक है कि क्या भारत की नीति दबाव में बदल रही है या ये बाजार की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। कुल मिलाकर, आंकड़े कमी दिखाते हैं, लेकिन ये स्थायी नहीं लगती।

कमी के पीछे की वजहें: टैरिफ से आगे की बात

भारत की रूसी तेल खरीद में कमी के पीछे कई वजहें हैं, जो सिर्फ अमेरिकी टैरिफ तक सीमित नहीं। सबसे पहले, अमेरिका के नए प्रतिबंधों ने रूसी तेल के जहाजों को प्रभावित किया है, जिससे डिलीवरी में देरी हो रही है। भुगतान का मुद्दा भी बड़ा है – भारत रुपए में भुगतान करना चाहता है, लेकिन रूस डॉलर या अन्य मुद्राओं की मांग कर रहा है, जिससे सौदे रुक गए हैं। साथ ही, रूसी तेल अब पहले जैसा सस्ता नहीं है, क्योंकि वैश्विक बाजार में कीमतें स्थिर हो गई हैं। भारतीय रिफाइनरियां अब मध्य पूर्व से तेल ले रही हैं, जहां कीमतें प्रतिस्पर्धी हैं और डिलीवरी आसान है। ट्रंप प्रशासन के 25% टैरिफ ने निश्चित रूप से दबाव बढ़ाया, लेकिन ये कमी दिसंबर 2025 से पहले भी शुरू हो गई थी। कुछ रिपोर्ट्स कहती हैं कि भारत ने रूस से कुल आयात 10% घटाया है, जो 2025 के पहले छमाही में 32.7 बिलियन डॉलर था। लेकिन क्या ये अमेरिका की जीत है? अमेरिकी वित्त मंत्री इसे अपनी सफलता बता रहे हैं, लेकिन भारतीय अधिकारी कहते हैं कि ये बाजार की स्थितियों से हुआ है, न कि दबाव से। भारत अपनी ऊर्जा नीति में विविधता ला रहा है, ताकि किसी एक स्रोत पर निर्भर न रहे। रूस के साथ व्यापार अभी भी मजबूत है, जैसे कि उर्वरक और हथियारों में। लेकिन अगर 500% टैरिफ का बिल पास हुआ तो स्थिति बदल सकती है। ये मामला सोचने पर मजबूर करता है कि वैश्विक राजनीति कैसे व्यापार को प्रभावित करती है, और देश कैसे अपने हितों का संतुलन बनाते हैं। भारत-अमेरिका संबंध बेहतर हो सकते हैं अगर टैरिफ हटा, लेकिन रूस के साथ पुराने रिश्ते भी महत्वपूर्ण हैं। कुल में, कमी असली है, लेकिन वजहें बहुआयामी हैं।

कुल व्यापार की तस्वीर: तेल से बाहर की कहानी

रूस के साथ भारत का कुल व्यापार अभी भी ऊंचे स्तर पर है, भले तेल आयात कम हुआ हो। 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार रिकॉर्ड 68.7 बिलियन डॉलर पहुंचा, जो महामारी से पहले के 5.8 गुना है। लेकिन 2025 में आयात में 10% की गिरावट आई, मुख्य रूप से तेल की वजह से। नवंबर 2025 में भारत से रूस को निर्यात 20.9% बढ़कर 369 मिलियन डॉलर हो गया, जबकि आयात 203 मिलियन डॉलर घटा। ये दिखाता है कि व्यापार संतुलित हो रहा है, लेकिन तेल अभी भी 80% से ज्यादा हिस्सा रखता है। रूस से उर्वरक, कोयला और धातु जैसे सामान अभी भी आ रहे हैं, और भारत रूस को मांस, फार्मा और मशीनरी निर्यात कर रहा है। क्या व्यापार कम हुआ है? हां, लेकिन सिर्फ तेल में, कुल में वृद्धि जारी है। विशेषज्ञ कहते हैं कि भारत रूस के साथ व्यापार को ऊर्जा से बाहर फैला रहा है, जैसे कि तकनीक और रक्षा में। अमेरिकी दबाव के बावजूद, भारत अपनी स्वतंत्र नीति रख रहा है। अगर टैरिफ हटा तो अमेरिका के साथ व्यापार बढ़ सकता है, लेकिन रूस के साथ संबंध बने रहेंगे। ये स्थिति विचारोत्तेजक है कि कैसे देश वैश्विक दबावों के बीच अपना रास्ता चुनते हैं। भविष्य में, अगर प्रतिबंध कम हुए तो रूसी तेल फिर बढ़ सकता है, लेकिन फिलहाल विविधता पर जोर है। कुल मिलाकर, व्यापार कम नहीं हुआ, बल्कि बदल रहा है।

भविष्य की संभावनाएं: संतुलन की चुनौती

अगर अमेरिका 25% टैरिफ हटाता है तो भारत को बड़ी राहत मिलेगी, और दोनों देशों के बीच व्यापार मजबूत होगा। वित्त मंत्री बेसेंट ने संकेत दिया है कि भारत की कमी से अमेरिका खुश है, और टैरिफ हटाने का रास्ता खुल सकता है। लेकिन क्या भारत रूस से पूरी तरह दूर हो जाएगा? शायद नहीं, क्योंकि रूस पुराना साझेदार है, और भारत की ऊर्जा जरूरतें बड़ी हैं। फिलहाल, भारत मध्य पूर्व और अमेरिका से ज्यादा तेल ले रहा है, जो नवंबर 2025 में बढ़ा है। लेकिन अगर रूसी तेल फिर सस्ता हुआ तो वापसी हो सकती है। वैश्विक विशेषज्ञ कहते हैं कि ये कमी अस्थायी है, और बाजार की स्थितियां बदलेंगी। भारत अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखना चाहता है, जहां वो अमेरिका के साथ दोस्ती बढ़ाए लेकिन रूस को नजरअंदाज न करे। अगर 500% टैरिफ आया तो दबाव बढ़ेगा, लेकिन भारत अन्य रास्ते ढूंढेगा जैसे कि अन्य मुद्राओं में व्यापार। ये मामला हमें सोचने पर मजबूर करता है कि ऊर्जा और राजनीति कैसे जुड़े हैं, और देश कैसे अपने हितों की रक्षा करते हैं। भविष्य में, भारत की भूमिका वैश्विक व्यापार में और महत्वपूर्ण होगी, अगर वो विविध स्रोतों पर निर्भर रहे। कुल में, टैरिफ हटना एक सकारात्मक कदम होगा, लेकिन सच्चाई ये है कि भारत अपनी शर्तों पर फैसले लेगा।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

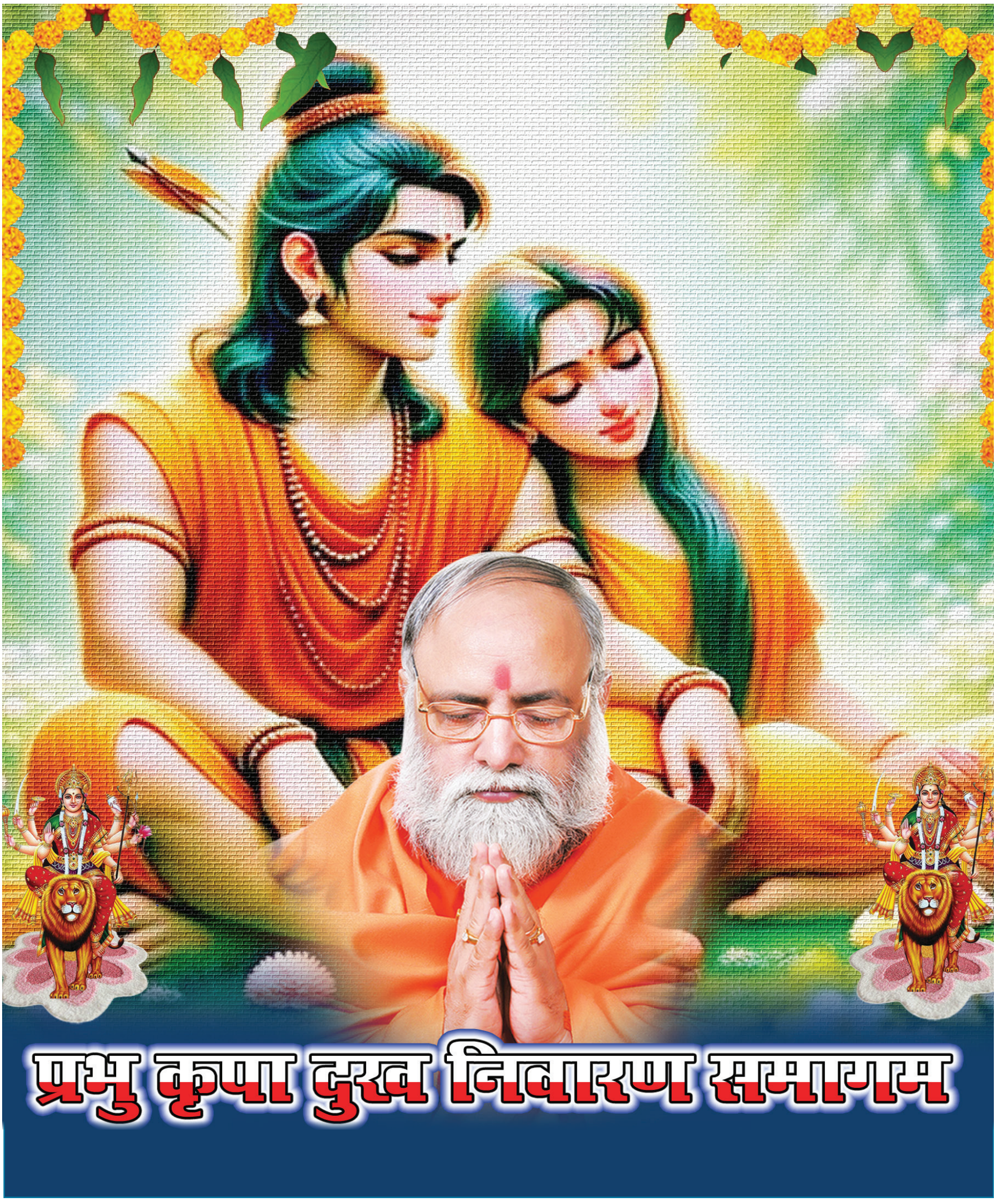

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries